॥ ओ३म ॥

मुस्लिम आर्य मिलाप सं० ३

वैदिक स्वर्ग और इस्लामी बहिश्त

लेखक

लक्ष्मण आर्योपदेशक

प्रकाशक

वैदिक पुस्तकालय, आर्य्यसमाज बिरला लाइन, देहली।

प्रथम बार १०००] सन् १९३८ [मूल्य ।)

विषय सूची

सं०	विषय	पृष्ठ
१	वैदिकव्रत या अहदल्लाह	१
२	कुरआनी बहिश्त	१४
३	यथार्थ आशय न समझने का परिणाम	२४
४	केवल दृष्टांत मात्र कथन	२५
५	उलटे और सीधे अर्थ	२६
६	वही पहिले उत्तम पदार्थ	२७
७	मिलते जुलते फल	२८
८	अजवाज मुतहहरा	२९
९	मुक्ति की नित्यता	३१
१०	कहां आत्मिक आनन्द कहां पाश्विक विषयभोग	३२
११	भूषण, वर्तन और कपड़े	३३
१२	सरसैयद अहमद साहिब और कुरआनी जन्नत	३२
१३	बयानुलकुरानकीसम्मति	३६
१४	हमायलुल सफ़ीर ,,	३९
१५	सारे कथन का आशय	४०
१६	वैदिक स्वर्ग	४१
१७	स्वर्ग का अधिकार	४२
१८	यज्ञ और ओदन	४२
१९	कुरआन में यही विषय	४४
२०	स्वर्ग में बहुत स्त्रियाँ	४५
२१	खूब समझे	४६
२२	संयमतथा जितेन्द्रियता	४७
२३	ब्रह्मचर्य की महिमा	४८
२४	कुरआन का फ़रमान	५३
२५	दूसरे मंत्रके अध्यात्मिकअर्थ	५
२६	भोग इन्द्रियाँ तथा भोग के साधन	५५
२७	संतान बृद्धि का यज्ञ	५७
२८	सुख का मूल मंत्र	५८
२९	तीसरेमंत्रके अध्यात्मिकअर्थ	५९
३०	रूहानी मेराज़	६०
३१	मनुष्य शरीर का रथ	६१
३२	आदर्श सफलता	६२
३३	सुख की धारें	६३
३४	औलाद रूपी नियामत	६४
३५	कुरानी नहरें, चश्मे और नियामतें	६५
३६	मोक्ष अवस्थावाली नियामतें	६६
३७	बहिश्त और उसका विस्तार	६७
३८	कामधेनु	६८
३९	ब्राह्मणों का कर्तव्य	६९
४०	सकल मनोर्थ पूर्ण	६९
४१	जगत विजयी	७०
४२	दो प्रकार का जन्नत	७१
४३	कर्तव्य पालन	७१
४४	दो चश्मे	७३
४५	दो और जन्नत	७४
४६	मुक्ति की अनित्यता	७६
४७	मुक्ति का काल	७९
४८	कुरआन से इसका प्रमाण	८०
४९	समाप्ति तथा प्रार्थना	८१

॥ ओ३म् ॥

वैदिक स्वर्ग ही इस्लामी बहिश्त है

१—वैदिक व्रत या अहद अल्लाह

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ यजु० १ । ५ ॥

हे व्रतों के स्वामी परमेश्वर ! मैं व्रत धारण करता हूँ कि मैं झूठ को छोड़कर सत्य को ग्रहण करता रहूँगा। ऐसी कृपा कीजिये कि मैं इस व्रत को पूरा कर सकूँ।

प्रिय पाठक वृन्द ! यजुर्वेद मनुष्यों को कर्म कांड का उपदेश देते हुये सर्व प्रथम सत्य के ग्रहण और असत्य के परित्याग का व्रत धारण कराता है और सच पूछो तो यही व्रत सारे शुभ कर्मों की जान है। इस व्रत को तोड़ना क्या है सर्व प्रकार के पतन तथा दुखों को बुलावा देना। प्रत्येक सोसाइटी वा कम्पनी में शामिल होने वाला पुरुष, राज्य सिंहासन पर बैठने वाला राजा, कौंसिल वा पार्लियामेंट का मैम्बर अर्थात् प्रत्येक मनुष्य अपने २ अधिकार का उत्तरदायित्व लेते हुए हलफ़ या व्रत लेता है। आर्य समाज, अंजुमन इस्लाम या कॉंग्रेस का मैम्बर जो सर्व प्रथम प्रतिज्ञा पत्र अथवा कोई फार्म भरता है यह सब इस वेदमन्त्र द्वारा प्रतिपादित नियम का ही द्योतक है। वेद मन्त्र में प्रत्येक

कर्म का आन्तरिक आशय या सब कर्मों में व्यापक एक मात्र अर्थ बता दिया है और वह है सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग।

कुरआन मजीद

में इस वैदिक व्रत को अहद अल्लाह कहा है। सू० बक़र आ०२६ का भावार्थ यह है कि किसी सत्य सिद्धान्त को समझाने के लिये जो दृष्टान्त दिया जाता है वह मच्छर, मक्खी आदि तुच्छ से तुच्छ प्राणी का क्यों न हो श्रेष्ठ धर्मात्मा पुरुष उसे अल्लाह की ओर से समझकर उससे शिक्षा ग्रहण करते हैं परन्तु फ़ासिक लोग इससे गुमराह भी हो सकते हैं। यह फ़ासिक़ लोग कौन हैं इसका उत्तर अगली आयत मे दिया है। (१)

फ़ासिक़ वह लोग हैं जो ईश्वरीय व्रत को अनादि काल से पुख़्ता होने पर भी तोड़ते और जिसकी प्राप्ति की ईश्वर ने आज्ञा दी है उससे सम्बन्ध हटाकर जगत में अशान्ति फैलाते हैं इसका भावार्थ यह है कि अहद अल्लाह का पूरा करना ईमान और इसका तोड़ना कुफ्र है। इस आयत में आया हुआ मीसाक़ शब्द रोजे-अज़ल (अनादि काल) का अर्थ रखता है जिसमें आत्मा ने व्रत धारण किया। दूसरे शब्दों में कुरआन आत्मा के स्वाभाविक तथा सर्वदा स्थिर व्रत को अहदल्लाह कहता है और उसे सृष्टि के आदि में मिले हुये ईश्वरीय ज्ञान का विषय मानता है। उस आदि काल वाले इलहाम को कुरआन, अलकिताब, किताबे मुबीन, किताबे मुनीर, लौहे महफ़ूज़, किताबे बिलहक़, कुरआने करीम आदि नाम देता तथा उसे उम्मुल किताब मानता है जिसमें, सब सत्य विद्याओं का पूर्ण रूप से वर्णन है।

सू० आल इमरान की छटी आयत में वर्णन है कि इस कुरआन में मुहकम और मुतशाबह दो प्रकार की आयतें हैं। मुहकम आयतें एक रस रहने वाले सर्व तन्त्र सिद्धान्तों का वर्णन करती है और कुरआन कहता है "हुन्ना उम्मुल किताबा" अर्थात यह आयतें उम्मुल किताब की हैं। अतः कुरान का उपरोक्त अहदुल्लाह निश्चय उम्मुल किताब (वेद) वाला व्रत ही है ।

सू० एराफ़ आ० १६६ में कहा है कि क़दीम सालिह लोगों की नालाइक़ सन्तान ईश्वरीय पुस्तक की मालिक ही बन बैठी और उसके नाम पर तुच्छ सांसारिक धन कमाने लगी। यह कह कर लिखा है:— (२)

क्या ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक वाला यह व्रत उनपर लागू

न होता था कि हम ईश्वर के विषय में सत्य के बिना कुछ न कहेंगे और जो कुछ ईश्वरीय (ज्ञान) पुस्तक में है उसका पठन-पाठन करते रहेंगे। इस आयत में प्रायः वह सारी बातें वर्णित हैं जो वर्तमान आर्य्यसमाज का चित्र उस समय के इस्लाम के रूप मे खींचती हैं। (१) सालिह (ब्राह्मण) लोगों की सन्तान का नालाइक़ होना (२) उनका ब्राह्मणों के बिना सबको वेद सम्बन्धी अधिकार से वंचित कर देना (३) सांसारिक धन का लोभी होना (४) ईश्वरीय व्रत को तोड़ना (५) इस व्रत का आशय केवल सत्य का प्रचार होना। यह स्पष्ट रूप से सिद्ध है तथा यह भी कि कुरआन सारे सालिह लोगों के लिये यह विशेष नियम मानता हूँ कि वह ईश्वरीय पुस्तक का पठन-पाठन करते रहेंगे। यह केवल मात्र आर्य्यसमाज का नियम ही है कि

"वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" सू० अनफ़ाल आ० ७।८ में भी ईश्वरीय इलहाम का उद्देश्य असत्य के परित्याग तथा सत्य के ग्रहण को ही माना है। (३)

"ईश्वर की इच्छा यही है कि अपनी वाणियों से सत्य को क़ायम और काफ़रों को निर्मूल करे। ताकि सत्य का सत्य और झूठ का झूठ होना प्रकट हो जावे'। चाहे इन पापियों को बुरा ही लगे।

सार यह कि क़ुरआन वेंदिक व्रत को ही अह्दल्लाह कहता या जीव का स्वाभाविक व्रत मानता है और हमें हर्ष है कि हम दोनों मुक़द्दस पुस्तकों की आज्ञा का पालन करते हुए इस लघु पुस्तक को प्रकाशित करते हैं जो देखने में छोटी पर मनुष्य समाज के लिये अनेक लाभकारी तथा हितकर गुणों का भण्डार होनेसे बहुमूल्यवान है। मुसलमानों में इस्लामी बहिश्त की प्रसिद्धि हुई जैसा कि वैदिक धर्मियों में स्वर्ग की थी। पर दोनों पक्ष एक दूसरे के कथन को मिथ्या तथा हास्यास्पद समझते थे। इस्लामी बहिश्त के विषय में तो विशेषत. अन्य मतावलम्बियों के अतिरिक्त मुसलमान लेखक भी विरोध पूर्ण टिप्पणी कर देते थे और जो इसका पोषण करते थे उनके टीका तथा भाष्यादि की युक्ति शून्यता भी दूसरों को आक्षेपादि का ही निमन्त्रण देती थी। इन्ही

टीका भाष्यादि के आधार पर

ही स्वामी दयानन्द ने अपनी जगत प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास मे एतराज़ किये और इन्ही को असल

इस्लाम समझकर अन्य प्रतिपक्षियों की तरह हमने भी "इस्लामी बहिश्त की हक़ीक़त" नाम की पुस्तक प्रकाशित की। जब सर सय्यद अहमद जैसे मुस्लिम लेखक को इन टीकादि के शब्दों के आधार पर यहाँ तक लिखना उचित प्रतीत हुआ कि 'यदि बहिश्त यही हो तो बिला मुबालग़ा हमारे खराबात इससे हज़ार दर्जा बेहतर हैं।' तब और लोगों का कहना ही क्या है। परन्तु हुआ सो हुआ हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि हमारी इस सारी कशमकश का परिणाम शुभ निकलता है और अन्त में हम यह कहने और सिद्ध करने के योग्य होते हैं कि वैदिक स्वर्ग और इस्लामी बहिश्त दो नहीं, किन्तु एक और केवल मात्र एक हैं। जिस प्रकार रात्रि के अन्धकार में खम्भा या हथबल्ला (Hand Post) चोर प्रतीत होता तथा भयभीत करता है, उसी प्रकार हम एक दूसरे का विश्वास खो रहे थे। परन्तु सत्य के सूर्य का उदय होने से दोनों का एक ही चाँद सा मुखड़ा हमारे सामने आया है और उसी का दर्शन कराना

इस पुस्तक का मुख्योद्देश्य

है। 'इस्लामी बहिश्त की हक़ीक़त' के पश्चात् मौलाना अब्दुल हक़ साहब ने 'वेदों का बहिश्त' नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें अनेक और विवादास्पद विषयों पर भी रीमार्क थे। हम ने इसका उत्तर आर्य्य मुसाफिर में लिखना आरम्भ किया ही था कि हमें और कामों की तरफ ध्यान देने के लिये वाधित होना पड़ा, यहाँ तक कि आखिर आर्य्य समाज के भूषण

स्वर्गीय पं० चमूपति जी एम० ए०

ने वैदिक स्वर्ग नाम पुस्तक के रूप में इस पुस्तक का सर्वाङ्ग पूर्ण उत्तर प्रकाशित किया। हमें शोक है कि हमने वैदिक स्वर्ग को पंडित जी के चल बसने के पीछे पढ़ा, अन्यथा जैसा कि वैदिक स्वर्ग से विदित होता है, हमें आपसे क़ुरान के वैदिक भाष्य में बहुमूल्य सहयोग मिलता। आपके देहावसान से कुछ ही दिन पहिले गुरुदत्त भवन वैदिक लायब्रेरी में आप सत्यार्थप्रकाश के उर्दू तर्जुमे की पड़ताल का काम कर रहे थे और हम क़ुरान का भाष्य सम्बन्धी काम कर रहे थे। मूल क़ुरान पर विचार करने से हमें ऐसी सचाइयों का बोध हो रहा था कि उनके आधार पर हमें वैदिक धर्मियों और क़ुरआनानुयाई और मुसलमानों का पारस्परिक द्वेष सर्वथा निराधार प्रतीत होता था, इसलिये हमने पंडित जी से कहा, क्या आपको मालूम है, मैं कौन सी मुहिम अख़्तयार किये बैठा हूँ आपने उत्तर दिया. 'हाँ मालूम है और अच्छी तरह मालूम है, पर मैं कुछ कर तो तभी सकता हूँ जब यह काम ख़तम हो ले।' आह! उस समय आपको क्या मालूम था कि और कामों में सहयोग देना तो कहाँ, मुझे सत्यार्थप्रकाश वाला हाथ में लिया हुआ काम भी पूरा करने की मुहलत न मिलेगी। तथापि

वैदिक स्वर्ग का मुतालिआ

हमें इस परिणाम पर पहुँचाता है कि आपको निश्चय हो चुका था कि निकटवर्तीय भविष्य में ही क़ुरान की तालीम वेद के अनुकूल सिद्ध हो सकेगी। इस्लामी बहिश्त और वैदिक स्वर्ग

के विषय में तो आपने विशेषतः इसी पुस्तक में यह आशा प्रकट कर दी थी। न केवल अपने विषय में मौलाना अब्दुलहक़ के सम्बन्ध में भी आप को विश्वास था कि वह वैदिक स्वर्ग की यथार्थ स्थिति को ही मन में सत्य समझते हैं चाहे इस्लामी बहिश्त पर किये गये आर्यों के एतराजों को आपने वैदिक स्वर्ग पर लागू करने का यत्न किया और वैदिक स्वर्ग की ख़ूबियों को क़ुरानी बहिश्त से जोड़ा। तथापि पंडित जी इस नीति को भी वैदिक स्वर्ग का ही समर्थन समझते थे। वैदिक स्वर्ग के कुछ उद्धरण इस बहस से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक विषयों पर प्रकाश डालेंगे।

(१) पृष्ठ १५ (वैदिक स्वर्ग) पर आपने 'वेदों का बहिश्त' से क़ुरानी जिन्नत सम्बन्धी वह उद्धरण पेश किया है जिसमें मौलाना ने इसे "रूहानियत की सरज़मीन में ईमानियात का बाग़" या 'एक कलमये तय्यिबा' या 'इफ्फ़त वा अस्मत की शमा' कहकर बड़े रोचक शब्दों में इसका वर्णन किया है। पंडित जी इस पर आवश्यक टिप्पणी करके फ़रमाते हैं:—

'इस्तआरों के परदे में मौलाना का यह एतक़ाद भी रह-रह कर ज़ाहिर होरहा है कि मौलाना मौजूदा जिन्दगी के रूहानी सरूर को नजात के सरूर का ज़िल्ल समझते हैं। वेदों के बहिश्त के मुतालिआ करने का यह वहीही फल है। वेद ने इस ज़िन्दगी के पाकीज़ा सरूर को स्वर्ग माना है। मुक्ति स्वर्ग की इन्तहा है जिसका आग़ाज़ इसी ज़िन्दगी में होता है।'

(२) पंडित जी का यह परिणाम निकालना क्यों युक्त एवं

अपेक्षित था इसका उत्तर आपके इन शब्दों में है "अगर मौलाना बहिश्त की यह तफ़सीर कुरान करीम के लफ़्ज़ो में ही नाज़रीन के पेशे नज़र फ़रमा देते तो जहाँ उनका अपने हम मज़ाहब भाइयों पर यह इहसान होता कि उनकी इबादात का मक़सद ख़ालिस रूहानी लज़्ज़ात रह जातीं वहाँ हम भी यह देख कर बहुत ममरूर होते कि ऋषि के एतराज़ात का जवाब वही दिया गया है जो ऋषि को मतलूब था।"

(३) ऋषि को क्या मतलूब था इसके लिये आपने स्वामी जी के यह शब्द पेश किये हैं "इस तहरीर का मुद्दआ इन्सानों की तरक्क़ी है। हक़ व बातिल की तमीज़ के लिये सब मज़ाहब का कुछ न कुछ इल्म होना ज़रूरी है जिससे बाहम मुक़ाबले का मौक़ा मिले और लोग एक दूसरे के अयूब की तरदीद करके खूबियों को अख़्तियार करें। (सत्यार्थ प्रकाश १४ समुल्लास तमहीद ज़िमनी)

(४) इसके आगे पंडित जी स्पष्ट कहते हैं कि

'हमें अफ़सोस है मौलाना ने एतराज़ात के जवाब का यह रास्ता अख़्तियार नहीं फ़रमाया। इसके बरअकस हज़रत मौलाना ने कोशिश यह की है कि जो नुक्ताचीनी इस्लामी बहिश्तपर आर्य॰ समाजी मुअतरिज़ आयद करते हैं उन्ही का ख़ाका वेद के औराक़ में दिखाया जाये।"

(५) इस लेख शैली को पंडितजी ने दोषपूर्ण समझा, क्योंकि इससे कुरआन के कथन की सत्यता सिद्ध नहीं होती न दो झूठों से एक सच्ची बात बन सकती है। पंडित जी के यह शब्द इस

दोष को और भी स्पष्ट करते हैं:—

"मौलाना ने इञ्जील में से भी ऐसे इक़्तबासात नक़ल फ़रमाए हैं जिनसे यह शराबव कबाब की सूरत ईसाई बहिश्त में भी निकल आये ताकि हमा यारां बहिश्त की कहावत का इन सब पर इतलाक़ हो सके।

(६) इसी आशय को पृष्ठ १८ पर और भी प्रबल शब्दों में वर्णन किया गया है:—ग़ज़ब पर ग़ज़ब यह है कि आपने वेदों के बहिश्त में गुलगश्त करने के बाद एक निहायत पाकीज़ा मनज़र हदयए नाज़रीन फ़रमाया तो सही लेकिन इस मनज़र का जलवा कुरआन करीम की आयात में दिखाने की बजाए आप इस पाकीज़ागी के सरचशमा वेद और उपनिषद् पर भी कीचड़ फेंकने लगे। मौलाना क्या कहें कुरआन में वेद का स्वर्ग देखने की हसरत रह गई।

दिल की दिल ही में रही बात न होने पाई।

(७) परन्तु इन सारी शिक़ायतों के होते हुए भी पंडित जी को पूरा विश्वास था कि दोनों पक्षों के पारस्परिक संघर्ष का उद्देश्य एक ही है और अन्त में दोनों एक ही अभीष्ट स्थान पर पहुँचेंगे। इसका प्रमाण दीबाचे के अन्त में पृष्ठ ३५ के इन शब्दों से मिलता है:—

"मौलाना अब्दुल हक़ साहिब के वह 'ईमानियात का बाग़' और असमत व इफ़्फत की शमा के इस्तआरात हमें बहुत पसन्द आए हैं। इस्तआरा दर इस्तआरा इबारत में पेचीदग़ी ज़रूर पैदा हो गई है लेकिन इसका मफ़हूम वेदों के बहिश्त पर

ख़ूब सादक़ आता है। परमात्मा मौलाना को तौफीक़ दें कि वेदों के स्वर्ग की इन पाक़ीज़ा तजल्लियात से कुरआनी बहिश्त को भी आरास्ता कर सकें। उनकी यह ख्वाहिश तो उनके अपने अलफ़ाज़ से ही मुतरश्शुह हो रही है। हमारा और उनका क़लबी नसबुल-ऐन एक ही मालूम होता है अगर दर हक़ीक़त कुरआन वेद का हमनवा हो जाये तो सचमुच एक पाकीज़ा गंधर्व लोक की कैफ़-यत हो। उपनिषद् के शब्दों में

> यारब हमें तहक़ीक़ की तौफीक़ अता कर,
> दे ज़ौक़े सदाक़त हज़ो बातिल को मिटाकर।
> इस कलवए तारीक में हो जलवए ख़ुरशीद—
> करशामे फ़ना महू अयां सुबहे बक़ाकर॥

पंडित जी के दिल से निकले हुये यह शब्द स्पष्ट रूप से आर्य्य मात्र को वैदिक व्रत या अहदल्लाह के पूरा करने की ही शिक्षा देते हैं। हमारे अन्धकार युक्त हृदयों में वैदिक प्रकाश आने की तथा मृत्यु वा नाश से बच कर जीवित रहने की संभावना इसके बिना वह मानते ही नहीं। शोक है वह हमारे से हसरत भरे दिल के साथ सदैव के लिये जुदा हो गए परन्तु सच्चे सत्यप्रिय पुरुषों के अन्तरात्मा से निकले हुये वाक्य रंग लाए बिना नहीं रह सकते। क्या हुआ अगर मौलाना अबदुल हक़ साहब पंडित जी की इस कामना को पूरा करने पर ध्यान नहीं दे सके आख़िर हम एक ही लक्ष्य रखने वाले सब लोग भाई २ हैं, किसी मुसलमान विद्वान् ने किया तो क्या और आर्य्य सेवक ने किया तो क्या, असल उद्देश्य आज पूरा होता है और

वैदिक स्वर्ग की पाकीज़ा तजल्लियात से आरास्ता क़ुरआनी बहिश्त पाठकों की भेंट किया जाता है। इस विवादास्पद विषय पर सर्वाङ्गपूर्ण बहस की जाय तो सहस्रों पृष्ठों की पुस्तक भी तय्यार हो सकती है परन्तु वर्तमान स्थिति में यह संक्षिप्त सी बहस ही पर्याप्त हो सकती है जो केवल वेद और क़ुरआन के कुछेक प्रमाणों के आधार पर दोनों पक्षों को सन्मार्ग दिखा सकती है। हमें आशा है आर्य्य मुसलिम तथा अन्य सत्य-प्रिय विद्वान् हमारी इस तुच्छ भेंट को सहर्ष स्वीकार करेंगे और इसे शताब्दियों से फैलते हुए वैमनस्य और द्वेष के स्थान में स्थाई प्रेम तथा ऐक्य की स्थापना की आधारशिला बना दिखायेंगे। फ़ारसी कवि के यह शब्द सारे विद्वानों को उनके वास्तविक कर्तव्य का बोध करा रहे हैं कि

तोबराए वसल करदन आमदी।
नै बराए फ़सल करदन आमदी॥

(तू मिलाने के लिये आया है न जुदा करने के लिये) ईश्वर करे आर्य्य पुरुष, वेदों का बहिश्त' का लेखक तथा अन्य मुसलिम विद्वान् एक दूरदर्शी स्वर्गीय आर्य्य विद्वान् की एक प्रकार की भविष्यवाणी को पूरा कर दिखावें, जो वैदिक स्वर्ग के अन्त में इन शब्दों में की गई है:—

'यह कैफ़ियत वेदों के स्वर्ग की है अगर क़ुरआन का बहिश्त भी ऐसा ही हो तो फिर तो

मन तो शुदम तो मन शुदी मन तन शुदम तो जां शुदी।
ताकस न गोयद बाद अज़ीं मन दीगरम ती दीगरी॥

की कैफियत हो जाय। आर्य्य समाज और इसलाम में फ़र्क नाम को रह जाय और ऋषि दयानन्द की दिली आरज़ू पूरी हो। ऋषि फरमाते हैं:—

सब को तरीक़े यगानगत पर लाकर दुशमनी छुड़ा कर आपस में मुसतहकम मुहब्बत का रिश्ता क़ायम कर के सब से सब को आराम पहुँचाने के लिये मेरी कोशिश और मेरा मुद्आ है (सत्यार्थ प्रकाश ख़ातमा) तदनन्तर पंडित जी 'वेदों का बहिश्त, के लेखक को इन शब्दों में सम्बोधन करते हैं।

"आप फ़ौरन क़ायल हों या न हों अमलन तो आप की तफ़सीर इस बात की बय्यन शहादत दे रही है कि आपका अन्दरूनी एतक़ाद ऋषि दयानन्द की तलक़ीन में है। आप ने कुरआन शरीफ़ में से कुछ हद तक वही रास्ता निकालने की कोशिश की है जो वेदशास्त्र और ऋषि दयानन्द का है। दरहक़ीक़त माक़ूलियत और बे लोस रूहानियत का रास्ता है ही वही। ऋषि की तलक़ीन का मुकम्मल मुरीद, मुकम्मल पैरौ हो जाने के लिये और हिम्मत की ज़रूरत है। वही तलक़ीन कुरआन मजीद के अलफ़ाज में मिलती है या नहीं, यह जुदा बात है इसके इशारे ज़रूर कुरआन में हैं। इन इशारात की बुनियाद पर मुकम्मल इमारत खड़ी कर लेना मेहनत और ज़हानत चाहता है। मुमकिन है इस में कामयाबी हो जाय। इस वक्त जैसे हमने मुनदरजा वाला इक़तबासात से साबित किया है मुफ़स्सर साहिबान की इसतेदाद की कमी और मतन कुरआन की मुशकिलात की वजह से कोशिश पूरी वार आवर नहीं हो रही

ताहम कोशिश मुबारिक है। यह सिलसिला जारी रहे नतीजा आख़िर को यही होना है कि अहले इसलाम आर्य्य समाज के हमनवा हो जाएं। खुद कुरआन के शब्दों में हों या इसके बिना यह पेशीनगोई करना मुशकिल है"।

हमारे विचार में पंडित जी जिस परिणाम पर पहुंचे थे उस के क्रियात्मिक रूप में प्रकट होने का समय आ गया है और जिस विषय में पेशीनगोई करने को आप मुशकिल ख़्याल करते थे ईश्वर की अपार कृपा से वह अमर भी अब सुगमता से पूरा हो सकता है। क्योंकि स्वयं कुरआन की आयतें अन्य सारे सिद्धान्तों की भान्ति वैदिक स्वर्ग की सत्यता का भी प्रबल रूप से समर्थन करती हुई सिद्ध हो गई हैं।

अधिक क्या, इतना कहना ही पर्याप्त है कि चिरकाल के आर्य्य और मुसलिम विद्वानों के परस्पर के संघर्ष का परिणाम आख़िर पूरी अनुकूलता के रूपमें जनता के सामने आता है और हमारा दृढ़ विश्वास है कि पाठक वृन्द इस लघुपुस्तक को पढ़ कर वैदिकव्रत या अहदल्ला को पूरा करते हुये सत्य का बोल बाला करने में हमारे साथ सहमत होकर इस पवित्र कार्य्य में पूरा सहयोग देंगे। फूट की जगह प्रेम और ऐक्य का झंडा गाड़ कर उसकी छत्र छाया में सुख और शान्ति से मिलकर रहते हुये लोक और परलोक की सिद्धि का उपाय करेंगे। ईश्वर करे हमारी बुद्धियाँ हमें कुशलता पूर्वक इस अवस्था को प्राप्त करने का सीधा मार्ग दिखा सकें। ओ३म् शम्॥

२—क़ुरआनी जन्नत

क़ुरआन में बहुत सी आयतों में जन्नत का वर्णन है, जिसपर अन्य मतावलम्बी लोग बहुत से आक्षेप ही नहीं करते, इस्लाम के प्रवर्तक के विषय में भी उपालम्भ देते, तथा इस्लाम की शिक्षा के इख़लाक़ की दृष्टि से बहुत गिरा हुआ होने के रीमार्क पास करते हैं। 'इस्लामी बहिश्त की हक़ीक़त' नामी पुस्तक लिख कर लेखक ने भी क़ुरआनी जन्नत पर बहुत मख़ौल उड़ाया था। पर यह सब नुक़्ताचीनी क़ुरानी आयतों के टीका तथा भाष्यकारों की व्याख्या और हदीसों के शब्दों के आधार पर की गई थी। कुछ वर्तमान काल का बिगड़ा हुआ मज़ाक भी इसकी तह में काम करता था, अन्यथा यथार्थ स्थिति अन्त में यही सिद्ध होती है कि क़ुरान के द्वारा अरबी शब्दों में वैदिक स्वर्ग का ही चित्र खींचने का यत्न किया गया है। साधारण से शब्दों का आशय न समझकर मुसलिम विद्वान् भ्रान्ति में पड़े हैं और परिणाम यह हुआ है कि यह विषय भी परस्पर के वैमनस्यादि के बढ़ाने का ही कारण बना है। हम कुछ आयतें टीका सहित पेश करते हैं। उसके पीछे कुछ वेद मंत्र अर्थ सहित पेश करके वैदिक स्वर्ग तथा इस्लामी बहिश्त की एकता पर प्रकाश डालेंगे।

(१) सू० बकर आ० २५। और शुभ समाचार दे उनको जो सत्य को मानते और श्रेष्ठ कर्म करते हैं। उनके लिये बाग़ है जिनके नीचे नहरें बहती हैं और जब इस बाग़ के फलों की

निअमतें मिलती हैं तो कहते हैं, वाह वाह यह तो वह निअमतें हैं जो हमें पहिले मिली थीं, और मिलते जुलते फल लाये जायेंगे और वहाँ उनके लिये पवित्राचरण युक्त बीबियाँ होंगी और वह उसमें हमेशा रहेंगे। (प्र० ४)

(२) सू० एराफ़ आ० ४६। बहिश्त में प्रविष्ट हो जाओ तुम पर न कोई भय होगा न दुख। (प्र० ५)

(३) सू० तौबा आ० २१-२२। उनका रब उनको अपनी तरफ़ से अपनी दयालुता, प्रसन्नता का परिचय तथा बहिश्त का शुभ सन्देश देता है। जहां उनके लिये एक रस रहने वाली निअमतें होंगी। २१। वह हमेशा उसी में रहेंगे। निश्चय ईश्वर के यहाँ ही बड़ा उत्तम फल है। (प्र० ६)

(४) सू० यूनस में निअमतों वाले बाग़ों और उनसे सम्बद्ध नहरों का वर्णन करके आ० ६ में कहा है:—जन्नती लोग जन्नत में यह शब्द बोला करेंगे। 'पाक ज़ात है तेरी ऐ ख़ुदा' वह वहाँ चिरकाल तक क़ायम रहने वाला निर्दोष जीवन व्यतीत करेंगे और उनका अन्तिम (सर्वोच्च) वचन यह होगा कि स्तुति हो उन जगदीश्वर को या धन्य हो धन्य हो हे जगदीश्वर (प्र० ७)

(५) सू० हूद आ० १०८:—और जो लोग भाग्यवान हैं, जन्नत में होंगे, जब तक पृथिवी और द्यौलोक क़ाइम हैं, सिवाय उसके जो ईश्वर के ही योग्य है। यह दान निश्चय क़ायम रहने वाला है। (प्र० ८)

(६) सू० रअद आ० २०-२२ में जन्नत के अधिकारी श्रेष्ठ पुरुषों के गुण इस प्रकार वर्णन किये हैं:—जो लोग अहदल्लाह

को पूरा करते हैं अर्थात् अपने व्रत को तोड़ते नहीं—२०—और जो उसको प्राप्त करते हैं जिसके प्राप्त करने की ईश्वर ने आज्ञा दी है और अपने प्रभु तथा कर्मों के हिसाब सम्बन्धी दोष से डरते हैं। २१। और जो लोग ईश्वर परायण ही रहते हुये सन्तोष से काम लेते हैं और नमाज़ें पढ़ते हैं और ईश्वर के दिये हुए रिज़्क़ में से गुप्त प्रकट हर प्रकार से धर्म कार्यों में लगाते हैं और बुराई के बदले में भी लोगों से भलाई करते हैं। यही वह लोग हैं जिनके लिये दारुल आक़िबत (परलोक वाला घर) है। (प्र० ६)

(७) सू० रअद आ० २३-२४। दारुल आक़िवत (परलोक वाला घर) वह बाग़ों वाला जन्नत है, जिसमें वह प्रविष्ट होंगे और उनके बापदादों, बीवियों और उनकी सन्तान में से जो जो श्रेष्ठ कर्म युक्त होंगे, वह भी और फ़रिश्ते (ज्ञानी आत्मा) उनके पास प्रत्येक द्वार से आकर कहेंगे—२३—आपने जो सबर किया उसके कारण से यह सलामती है और आपके सांसारिक जीवन का यह अच्छा अञ्जाम (अन्त) है। —२४ (प्र० ६)

(८) श्रेष्ठाचारी मनुष्यों के लिये जो जन्नत नियत है, उसका वर्णन यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं। वहां के खाने या फल सदा एक रस हैं और उसकी छाओं भी। यह है अन्त संयमी पुरुषों का और काफ़िरों का अञ्जाम दोज़ख़ है। (प्र० १०)

(९) सू० रअद आ० ४५-४८। श्रेष्ठाचरण युक्त लोग बाग़ों और चश्मों में रहेंगे—४५—वह शान्तावस्था में सलामती के साथ दाख़िल होंगे। ४६। उनके सीने में जो दुख होगा, वह हम

दूर कर देंगे। यह एक दूसरे के सम्मुख आनन्द युक्त अवस्था में भाईयों के से प्रेम के साथ रहेंगे। ४७। दुख उन्हें वहां छूएगा भी नहीं और न वह वहां से निकाले जायेंगे। ४८। (प्र० १२)

(१०) सू० नहल आ० ३१ में जन्नत का वर्णन करते हुए कहा है:—'लहुम फ़ीहा मा यशाऊना,' उनके लिये वहां जो वह चाहेंगे मौजूद होगा।

(११) सू० कहफ़ आ० ३१। वहां उन्हें सोने के कङ्गन पहनाए जावेंगे। बारीक और मोटे रेशम के कपड़े उनके शरीर को सुशोभित करेंगे और वह तख़्तों पर तकिये लगाये होंगे। वाह! क्या अच्छा फल है और क्या अच्छा ठिकाना। (प्र० १३) सू० फ़ातर आ० ३३ में भी सोने के कङ्गन, मोती और रेशमी लिबास का वर्णन है)

(१२) सू० कहफ़ आ० १०७,१०८। निश्चय जो लोग सत्य को मानते और शुभ कर्म करते हैं उनके लिये फ़िरदौस के बाग़ होंगे। १०७। उनमें वह हमेशा रहेंगे और न चाहेंगे कि उनसे अलग हों। (प्र० १४)

(१३) सू० मर्यम आ० ६०—६२। बाग़ों वाला जन्नत वह है जो दयालु भगवान ने अपने सूक्ष्मदर्शी या परोक्षवादी बन्दों के लिये नियत कर रखा है निस्सन्देह ईश्वरीय नियम अटल है। ६१। वहां सिवाय सलामती वाली बात के कोई झूठी बात सुनने में न आएगी और उन्हें सायं प्रातः उनका रिज़्क़ मिलता रहेगा। ६२। इसी जन्नत का स्वामी हम अपने उस भक्त को बनायेंगे जो संयमी होगा। ६३। सू० फ़ुरक़ान आ० ७५, ७६॥ (प्र० १५)

(१४) उनको उनके सबर के कारण उच्च पद वा स्थान मिलेंगे वह उनमें चिरकाल तक रहने वाला जीवन और स्वस्ति पाएंगे। ७५। हमेशा उसी में रहेंगे। वाह। क्या अच्छा ठिकाना और क्या ही उत्तम स्थान है। ७६। (प्र० १६)

(१५) सू० रूम। आ० १५। ईमान जाने और श्रेष्ठ कर्म करने वाले जन्नत के बागों में आनन्द पाएँगे। (प्र० १७)

(१६) सू० सिजदा, आ० १७। सो कोई मनुष्य नहीं जानता कि उनके कर्मों के फल रूप में उनकी आँखों की ठण्डक का क्या क्या सामान ईश्वर की रचना में छिपा हुआ है। (प्र० १८)

(१७) सू० अहज़ाब आ० ४४। जब वह ईश्वर से मिलेंगे उन्हें चिरकाल तक रहने वाला शान्त जीवन प्राप्त होगा और सर्वोच्च तथा सर्वोत्तम फल उनके भागों में होगा। (प्र० १९)

(१८) सू० सबा, आ० ३७। जो ईमान लाकर श्रेष्ठ कर्म करेगा उसको कई गुणा फल मिलेगा उसके कर्मों के कारण। और वह इस उच्चावस्था में शान्तिपूर्वक रहेंगे।

(१९) सू० फ़ातर आ० ३४-३५। और कहेंगे "धन्य है, वह परमेश्वर जिसने हमारे दुख मिटा दिये। निःसंदेह हमारा रब बख़शने और बड़ा क़दर करने वाला है—३४--जिसने हमें अपने फ़ज़ल से हमें इस उत्तम स्थान में पहुँचाया है कि न इसमें मुशक़्क़त है न कष्ट न थकान। ३५ (प्र० २१)

(२०) सू० यासीन आ० ५५-५८। निःसंदेह जन्नती लोग उस दिन अपने आनन्द भोग रूप फल प्राप्त कर रहे होंगे। ५५--वह और उनकी बीबियां सायों में तख़्तों पर तकिये लगाये होंगी।

५६-उनके लिये वहां फल होंगे और जो वह चाहेंगे वो पायेंगे और दयालु भगवान् का शब्द होगा। 'स्वस्ति'। ५८। प्र० २२)

(२१) सू० साफात आ० ४०-६२ तक। परन्तु जो ईश्वर के अनन्य भक्त हैं-४०-उनको प्रारब्ध में बड़ा रिज़क है-४१-अर्थात फल और वह बड़ी बुजुर्गी वाले होंगे-४२-निआमतों वाले बागों में-४३-तख्तों पर आमने सामने-४४-उन्हें बहते हुये जल का प्याला भर दिया जावेगा-४५-साफ सफेद और पीने वालों के लिये स्वादू। ४६-न इस मे हलाकत न नशा-४७-और उनके पास बड़ी आँखों वाली नीचे नेत्रों वाली होंगी-४८-मानो वो सुरक्षित अंडे हैं। ४९-सो वह एक दूसरे की तरफ ध्यान करके हाल पूछेंगे-५०-उनमें से एक कहेगा मेरा एक साथी था-५१-वह कहता था क्या तुम भी इसको सच मानते हो-५२-कि जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ रह जावेंगे हमे फिर बदला मिलेगा। ५३-कहेगा क्या तुम झांकना चाहते हो-५४-सो उसने झांका तो उसे नरक के बीच में देखा। ५५-कहा ईश्वर जानता है तूने तो मुझे तबाह ही किया होता-५६-और यदि ईश्वर का अनुग्रह न होता तो मै भी इन दुख पाने वालों में होता। ५७-तो क्या तुम मरने वाले नहीं। ५८-सिवाए इस पहली मौत के और हमें दंड (दुख) नहीं मिलेगा। ५९-निश्चय यह बड़ी सफलता है और ऐसी ही सफलता के लिये कर्म करने वालों को कर्म करने चाहियें। ६०-क्या यह अच्छा न्योता (भोजन) है या थोहर का वृक्ष? ६२ (प्र० २३)

(२२) सू० स्वाद० ५०—५३। बहिश्त के बागों के द्वार उनके

लिये खुले होंगे तकिये लगे होंगे। बहुत से खाने के मेवे और पीने की चीजें होंगी। ५०-और उनके पास नीची निगाह वाली बीबियाँ होंगी उनके अनुकूल आयु वाली। ५१-यह है वह कुछ जो तुम्हारे लिये हिसाब वाले दिन में होगा। ५२-निस्संदेह यह हमारा दिया हुआ रिज़क़ है जिस के लिये अन्त नहीं है। ५३-(प्र० २४)

(२३) सू० ज़मर आ० २० । परन्तु जो लोग अपने रब्ब का भरोसा रखते हैं उनके लिये एक से एक बढ़ कर स्थान हैं। जिन के नीचे नहरें बहती हैं। यह अल्लाह का क़ानून है। खुदा अपने क़ानून को नहीं तोड़ता। (प्र० २५)

(२४) सू० ज़मर आ० ६१। और जो लोग तक़वा अख़तियार करते हैं, ईश्वर उनकी कामनाएँ पूरी करके उन्हें मोक्ष देगा उन्हें न कोई कष्ट होगा न दुख। (प्र० २६)

(२५) सू० ज़मर आ० ७३-७४। और जो लोग अपने रब्ब का खौफ़ करते रहे वह टोलों के टोले बहिश्त की तरफ़ ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि वह उसके पास पहुंचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल जाएँगे और जन्नतके प्रतिनिधि कहेंगे 'स्वस्ति' हो आप पर। आप बड़े भाग्य-शाली हैं अतः इस में सदा के लिये प्रविष्ट हो जाओ ७३-वह कहेंगे, स्तुति हो उस प्रभु की जिसने अपना नियम पूरा किया और हमें इस भूमि का मालिक बनाया कि जन्नत में हम जहाँ चाहें रहें। वाह वाह! शुभ कर्म वालों के लिये क्या ही अच्छा फल है। ७४ (प्र० २७)

(२६) सू० मोमन आ० ४०। और मोमन चाहे पुरुष हों

चाहे स्त्री जो अच्छे कर्म करेंगे जन्नत में दाख़िल होंगे जहाँ उन्हें बे हिसाब रिज़्क़ मिलेगा। (प्र० २८)

(२७) सू० दुख़ान आ० ५१-५६ तक में बागों, चश्मों, बारीक और मोटे रेशमी कपड़ों, हूरों और मेवों का वर्णन करके आ० ५७ में लिखा है:—इस पहली सांसारिक मृत्यु के पश्चात जन्नत में मौत का दुख उठाना न पड़ेगा और ईश्वर उन्हें दोज़ख के दुख से सुरक्षित रखेगा। (प्र० २९)

(२८) सू० मुहम्मद आ० १३। जन्नत जो संयमी लोगों के भागों में है उसका हाल यह है कि उसमें अमृत बह रहा है और ऐसे दूध की नहरें हैं जिसका स्वाद बदलता नहीं और ऐसे शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिये स्वादु हैं और साफ़ शहद की नहरें हैं। उनके लिये वहाँ बहुत प्रकार के फल हैं और उन के रब्ब की तरफ़ से बख़्शिश है। (प्र० ३०)

(२९) सू० काफ़० आ० ३४। प्रसन्नता पूर्वक इसमें प्रविष्ट हो जाओ। यह चिरकाल तक रहने वाली नित्यता का काल है। (प्र० ३१)

(३०) सू० तूर आ० १७-२५। इनमें जन्नतों, मेवों, निआमतों का मिलना, दोज़ख के दुख से छूटना, तख़्तों, तकियों तथा खाने पीने का तथा हूरों और जन्नतियों की शुभ कर्म करने वाली सन्तान को बहिश्त मिलने का वर्णन है। फिर लिखा है:— जिन मेवों और फलों को वह चाहेंगे, हम उन्हें देंगे। २२-इसमें वह एक दूसरे को वह प्याला भी लेवा देंगे जिस में न कोई बुरी हरकत होगी न पाप। २३-और उनके इर्दगिर्द चमकते हुए

मोतियों की मानिन्द लड़के होंगे। २४-और एक दूसरे की तरफ़ ध्यान देकर पूछे या बातें करेंगे। २५ (प्र० ३२)

(३१) सू० क़मर आ० ५४-५५। निश्चय संयमी पुरुष बाग़ों और नहरों में होंगे। ५४- अर्थात् सिद्क़ वाले स्थान में उस सर्व शक्तिमान भगवान की समीपता में (प्र० ३३)

(३२) सू० रहमान आ० ४६-७७ तक। इन आयतों में ४७-४९ आदि ताक़ वाली आयतें छोड़ दी हैं क्योंकि उन सबके यही शब्द हैं, 'फ़बिअय्ये आला इ ए रब्बिकुमा तुक ज्जबाने।' अर्थात् तुम अपने रब की किस २ निआमत से इन्कार करोगे। शेष का अनुवाद इस प्रकार है:- और जो मनुष्य अपने रब के उच्चाधिकार तथा उसके तेज से डरता है उसके लिये दो बाग़ हैं दोनों की कई शाखा हैं। ४८- दोनों में दो चश्मे जारी हैं-५० दोनों में प्रत्येक प्रकार के फल के जोड़े हैं। ५२। फ़र्श बिछे होंगे। उन पर ऐसे तकिये लगे होंगे कि उनके अस्तर ताफ़ते के होंगे- ५४- और दोनों के फल समीप होंगे। ५६। उनमें नीची निगाह वाली होंगी जिन्हें उनसे पहिले न मनुष्य ने छुआ होगा न जिन ने। ५८। मानों वह याक़ूत और मूंगा हैं। ६०। क्या नेकी का बदला भलाई के अतिरिक्त कुछ हो सकता है। ६२। और इन दोनों के अतिरिक्त दो और बाग़ हैं। ६४। दोनों सरसब्ज हैं। ६६। इन दोनों में फल हैं और खजूर और अनार। ६८। इनमें सुशील स्वभाव युक्त रूपवती स्त्रियाँ हैं। ७०। यह हूरें हैं ख़ेमोंमें रहने वाली। ७२। इन्हें इन से पहिले न किसी मनुष्य ने छुआ होगा, न जिन ने। ७४। सब्ज क़ालीनों और अच्छे २ फ़र्शों पर तकिये लगाये होंगे। ७६। (प्र० ३४)

(३३) सू० हदीद आ० २१। अपने रब्ब की दयालुता और उस जन्नत की ओर लपको जिसका फैलआ द्यौ तथा पृथिवी लोक का ही फैलाव है और जो ईश्वर और रसूल पर ईमान लाने वालों के ही भाग्य में है। यह ईश्वर का फ़ज़्ल है जिसपर चाहे करे। निश्चय वह बड़ा ही फ़ज़्ल वाला है। (प्र० ३५)

(३४) सू० दहर आ० ५, ६ । भले लोगो को काफ़ूर की मिलावट वाला जल पिलाया जावेगा । ५ । यह काफ़ूर वाला चश्मा होगा जिसका पानी ईश्वर के भक्त पियेंगे। यह काटकर कहीं बहाया ले जा सकता है। ६ । (प्र० ३६)

(३५) सू० दहर आ० १२–२१ । और उन्होंने जो सब्र किया था उसके बदले उन्हें बहिश्त और रेशमी कपड़े मिलेंगे । १२ तख्तों पर तकिये लगाये होंगे न तपश न सर्दी। १३–वृत्तों के साये उनपर झुके पड़ते हैं और फल हैं कि उनके आधीन हैं— १४–और उनपर शीशे जैसे साफ चाँदी के बर्तनों और आबखोरों का दौर चलेगा। १५–और शीशे भी चाँदी के जो उनके लिये ही नियत हैं। १६–वहां उनको सोंठ की मिलावट वाले पानी के प्याले पिलाये जाएँगे। १७–बहिश्त में इस पानी का चश्मा होगा जिसका नाम सल्सबील है। १८–और बहिश्तियों के इर्द गिर्द हमेशा रहने वाले बच्चे होंगे। ऐसे सुन्दर कि तू उन्हें देखे तो यही समझे कि बस बिखरे हुये मोती ही हैं। १९–और जब तू देखेगा तो बड़ी निआमत और सलतनतका वहाँ सामान पाएगा। जन्नतियों पर कपड़े होंगे, सब्ज़, रेशमी, सफेद और दबीज़। और उनको चाँदी के कड़े पहिनाए जाएँगे और उनका परमेश्वर उन्हें पवित्र पीने की चीज़ें पिलाएगा। २१। (प्र० ३७)

(३६)सू० ततफ़ीफ़ आ०२२-२८। निस्सन्देह भले पुरुष बड़ी निआमतों में होंगे-२२-तख़्तों पर बैठे देखरहे होंगे-२३-तू उनके चेहरों से ही प्रसन्नता का दृश्य देख पाएगा-२४ उनको मुहरबन्द ख़ालिस शराब पिलाई जायगी-२५ उनकी मुहर मुशक की होगी! रशक करने वालों के। उसी का रशक करना चाहिये २६-उसमें तसनीम की मिलावट होगी अर्थात सबसे अच्छी चीज़ की-२७-तसनीम एक चशमा है जिस का पानी ईश्वर के उपासकों को पिलाया जाता है २८ (प्र० ३८)

(३७) सू० बय्यिनात, आ० ८ में बहिश्त का वर्णन करते हुये जन्नतियों के लिये लिखा है, अल्ला उनसे राज़ी और वह उस से खुश (प्र० ३९)

३-यथार्थ आशय को न समझने का परिणाम

उपरोक्त आयतों के बहुत से शब्दों और वाक्यों के न समझ कर मुसलिम विद्वान तथा आक्षेपक लोग व्यर्थ की बहस में पड़ रहे हैं विरोधी लोग तर्जुमा आदि के शब्दों को अपने विचार के अनुसार प्राय। बुरे भाव और पक्षपात पूर्ण टिप्पणियों का निशाना बनाते हैं और अनुवादक तथा भाष्यकार लोग अज्ञान के कारण आक्षेपों का सन्तोष जनक उत्तर देने में असमर्थ हो रहे है जहाँ बागों व नहरों का शब्द आया उन्हें अपने हां के बाग़ तथा नहर ही समझ लिया और विषयासक्त पुरुष जिस प्रकार विशेष ऋतुओं में वैश्या आदि के साथ लिये बागों की सैर करते और वृक्षों के फूल और साया आदि का विषय वासना की तृप्ति आदि कुकर्मों में दुरुपयोग करते हैं, कुरआन के शब्दों

का वही आशय समझ कर विचित्र ही प्रकार के भाव प्रकट किए गए और जन्नत मे बीबियों का वर्णन पा कर इस विषय भोग को विहित समझा गया। बीबियों का शब्द बहुवचन में था इसलिये समझा गया कि एक एक जन्नती को बहुत सी हूर या बीबियाँ मिलेंगी और विशेष अवसरों पर जो ७० का अंक पवित्र समझा जाता था हूर के साथ बढ़ा दिया गया। ऐसे ही गिलमान का शब्द भी बुरे अर्थो में लेकर ७२ की संख्या लिख दी गई। पौशाक शराब, आदि के सब शब्द आजकल के गिरे हुए भावोंकी कसौटी पर कसे गये। हूरों को कभी मनुष्य वा जिन्न ने न छुआ होगा तथा उनकी बड़ी बड़ी आँखे, नीची निगाहें इस अर्थ मे लीगई कि इस से कामातुर पुरुषों के गैरत के भाव की तुष्टि की जावे जिसके प्रभाव से वह किसी स्त्री को अपने से इतर पुरुष से प्रेम करने के कारण जान से मार डालते हैं। हसन बिन सब्बाह ने जो एक फर्जी बहिश्त इस दुनियाँ में बनाकर ऐसे अनाचार कराए कि जिन के कथन मात्र से बड़े से बड़े बलवानों का दिल भी काँप जाता है वह भी कुरआनी बहिश्त सम्बन्धी अज्ञान का ही परिणाम था। निम्न लिखित संकेतों में इस बात का दिग्दर्शन कराके हम वैदिक स्वर्ग का वर्णन करेंगे जिसका तसदीक करना ही उपरोक्त आयतों का एक मात्र उद्देश्य है।

४—दृष्टान्त मात्र

सब प्रथम यह बात विचारने योग्य है कि सब से पहिले बहिश्त का वर्णन सू० बकर आ० २५ मे आया है। और उससे

अगली आयत में कहा गया है—(प्र० ४०) निश्चय ईश्वर को किसी दृष्टान्त के वर्णन करने में कोई संकोच नहीं, चाहे वह मच्छर अथवा उससे भी किसी तुच्छ चीज का क्यों न हो। सो सत्यप्रिय पुरुष तो कहते हैं कि यह यथार्थ है और हमारे प्रभु की ओर से है। परन्तु नास्तिक बुद्धि पुरुष कहते हैं कि इस दृष्टान्त के देने की ईश्वर को क्या आवश्यकता थी। बहुतों को वह इससे गुमराह करता है और बहुतों को वह इससे शिक्षा देता है। पर गुमराह होते हैं तो फ़ासिक़ (अधर्मी) ही। इस प्रकार क़ुरआन ने मानो तुरन्त ही यह बता दिया था कि जन्नत वाला कथन आ० २५ में दृष्टान्त मात्र ही है। बीबियां आदि का वर्णन इसलिये है कि मनुष्यों को सुखों की दृष्टि से बहिश्त के लिये आकर्षण हो और वह धर्म को पालें। नास्तिक बुद्धि लोग आक्षेप कर सकते थे कि मुक्ति का वर्णन करते हुए ईश्वर को स्त्रियों का वर्णन करना उचित न था। पर क़ुरआन का उत्तर स्पष्ट है कि दृष्टान्त चाहे कैसा भी हो, भले पुरुष उससे वास्तविक तात्पर्य को ही ग्रहण करते हैं। इसमें संदेह नहीं कि कई पुरुषों पर किसी दृष्टान्त से कोई बुरा प्रभाव भी पड़ सकता है, पर इसमें दृष्टान्त का दोष नहीं होता उस पाप और दुराचार का दोष है, जो पहिले से उनके मनों में भर रहा है। कुछ ही हो यह आयत उन लोगों के कान भले प्रकार खोल रही है, जो हूर व ग़िलमान आदि को ही अन्तिम फल समझ या बता रहे हैं।

५—उलटे और सीधे भाव

यह भी विचारनीय बात है कि बाग़, नहरें, बीबियाँ और

निश्रामतें अपनी ज़ाहिरी अवस्था में भी दूषित नहीं हो सकतीं क्योंकि इनका सम्बन्ध विषयासक्त पुरुषों से ही नहीं हो सकता अपितु सत्य पूछो तो प्रभु ने इन्हें इन लोगों के लिये रचा ही नहीं। श्रेष्ठ, ईश्वर भक्त तथा संयमी लोग इनके द्वारा उत्तम जीवन व्यतीत करते हुए परलोक को सुधारने का प्रबन्ध करते हैं। इनको विषय भोगों का साधन बनाना मनुष्य के मार्गोच्युत होने का प्रमाण है, न कि विषय भोग के वेद विहित होने का। अतः कुरान का कोई भाष्यकार उसके इन शब्दों को सांसारिक विषय भोगादि के अर्थों में लेकर उनका दुरुपयोग करता है तो क़ुरान पर इसका उत्तर-दायित्व नहीं आ सकता।

६—वही पहिली निश्रामतें

जन्नत दो प्रकार का है, एक शारीरिक दूसरा आत्मिक। शारीरिक जन्नत का सम्बन्ध उन ही साधनों से है जिनसे दोज़ख वालों का है। श्रेष्ठ पुरुष भी बीवी, बाल-बच्चे तथा धन वाले हो सकते हैं और बुरे भी इन निश्रामतों को पासकते हैं। भेद केवल यह होता है कि बुरे लोग अपने अज्ञान के कारण उन ही पदार्थों का दुरुपयोग करके उन्हें अपने लिये दुख का कारण बना लेते हैं और श्रेष्ठ विद्वान् पुरुष ईश्वराज्ञा तथा ज्ञान के अनुकूल उनका सदुपयोग करके उन्हें सुख का हेतु बनाते हैं और इसी संसार में स्वर्ग का दृश्य देखते हैं। इसी विचार को लक्ष्य रखकर यह कहा जाता है कि हमें यही पदार्थ पहिले मिले थे और हमारे अज्ञान के कारण हमें दुख देते थे।

७—मिलते जुलते फल

मुतशावा (मिलते जुलते फलों वाला) शब्द आत्मिक जन्नत से सम्बन्ध रखता है। इस अवस्था में सांसारिक स्वर्ग वाले सामान नहीं मिलते, हाँ उनसे मिलते जुलते अवश्य हैं। वह इस प्रकार कि सांसारिक स्वर्ग में भी मित्र और सम्बन्धी हैं तो मुक्ति में भी आत्मा का अन्य अनेक मुक्त आत्माओं से प्रेम का सम्बन्ध है! यदि सांसारिक पदार्थों से इस जगत में सुख मिलता है तो मुक्ति में ईश्वर के योग से सच्चा आनन्द मिलता है। सांसारिक स्वर्ग में बुद्धि तथा ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ज्ञान होता है, तो मुक्ति में भी जीव को ईश्वर तथा प्रत्येक पदार्थ का यथार्थ साक्षातकार होता है। सार यह है कि जैसे प्रकृति कारण है और स्थूल पदार्थ उसका कार्य्य है और इस प्रकार यद्यपि उनकी एक ही सत्ता नहीं, तो भी अस्तित्वादि गुण दोनों में मिलते जुलते हैं। जैसे आत्मा से ग्रहण होने वाला आनन्द और इन्द्रियों से अनुभव होने वाला सुख एक नहीं, पर सुख का भाव दोनों में मिलता जुलता है। वैसे ही सांसारिक पदार्थों और मुक्ति में मिलने वाले आनन्दादि में एक दूसरे से मिलते जुलते शब्दों तथा गुणों का सम्बन्ध है। अलंकार और दृष्टान्त के द्वारा जो कुछ भी समझाया जाता है वह सब इसी का परिणाम है कि भिन्न भिन्न पदार्थों में मिलती जुलती बातें पाई जाती हैं। हम कह सकते हैं कि जैसे गेहूँ व आम का बीज बोकर हम विशेष प्रकार का अन्न व फल पाते हैं वैसे ही सत्य ज्ञान का बीज बोकर हम मुक्ति का फल पाते हैं इत्यादि। इससे सिद्ध है कि शरीर और आत्मा के भिन्न भिन्न

सम्बन्धों से चाहे हम दो सत्ताओं को एक न कह सकें, विशेष प्रकार की समानता से उन्हें एक दूसरे के मुतशाबा अवश्य कह सकते हैं।

८—पाक बीबियां

आ० २५में एक शब्द है 'अज़वाज', जो ज़ौज का बहुवचन है जिसका अर्थ है 'साथी या जोड़े मे से दूसरी व्यक्ति।' पुरुप का ज़ौज स्त्री है और स्त्री का ज़ौज पुरुष है। सांसारिक स्वर्ग मे पुरुषों को आदर्श सदाचार तथा सतित्व पूर्ण स्त्रियों का मिलना वह निआमत है जो गृहस्थ के सुख तथा सफलता का एक मात्र मूल मंत्र है और ऐसी नेकपाक बीबियों का गुण क़ुरआन मुतहरा शब्द से वर्णन करता है। पर स्त्रियों का शब्द बहुवचन में आने का यह आशय नहीं हो सकता कि एक एक पुरुप को बहुत सी स्त्रियां मिलेंगी क्योंकि यदि स्त्रियां भी बहुत हों और जन्नती पुरुप भी बहुत, तो इससे एक पुरुप के लिये एक स्त्री का ही भाव सिद्ध होता है साथ ही कुरआन अन्य स्थान में भी कहता है कि न्याय और सुख पूर्वक निर्वाह करने के लिये एक ही स्त्री से सम्बन्ध होना उचित है। वर्तमान काल में भी बड़े २ नगरों में क्या और छोटे २ ग्रामों में क्या, सुशील सदाचारिणी स्त्रियों के सहयोग से ही प्राय: पुरुष स्वर्ग भोगते देखे जाते हैं। सदाचारी पुरुष और स्त्री का मेल कौन से सुख को अपने घर की तरफ़ नहीं खींचता। अतः अनेक वा ७० हूरों वाले वाक्यों का बहिश्त से कोई सम्बन्ध नहीं। कुरआन बहु बिवाह के पक्ष में नहीं। सू० निसा८ के आरम्भ में अनाथ कन्याओं की रक्षा के

सम्बन्ध में पुरुषों का कर्तव्य बताते हुये कहा है कि चाहे २-३ वा ४ तक निकाह अन्य स्त्रियों से करलो अनाथ कन्यायों के साथ अन्याय न करो। इस का स्पष्ट आशय यह है कि एक से अधिक स्त्रियों का होना भी दूषित ही है चाहे अनाथ कन्याओं से अन्याय होना उस से भी बड़ा पाप है। और यह भी फ़रमाया है कि

फ़इन ख़िफ़तुम अल्लातादिलूऽ फ़वाहिदतन

अर्थात अधिक स्त्रियों के होने में न्याय पूर्ण व्यवहार का निश्चय नहीं हो सकता अतः एक ही स्त्री से विवाह का होना उचित है। सो जब कुरआन का आदेश स्पष्ट है तब बहुत स्त्रियों वा हूरों के मिलने के अर्थ क्या? कारण यह कि मनुष्य देहधारी स्त्रियों का सम्बन्ध सांसारिक स्वर्ग में ही तो होता है। रहा आत्मिक स्वर्ग उस में इन स्त्रियों का सम्बन्ध हो ही नहीं सकता। जीवात्मा के साथ मुक्ति में रहने वाली स्त्रियाँ उसकी स्वाभाविक शक्तियां ही हो सकती हैं और वह जब से जीवात्मा का अस्तित्व है तब से ही उसके साथ हैं। यही आशय प्र० सं० २३, सू० स्वाद में उन बीबियों को हम उपर (अनुकूल आयुवाली) कहनेसे है। इन शक्तियों को पवित्र (पाकीज़ा) बीबियाँ कहना इसलिये भी उचित है कि उनका कभी किसी दूसरे जीवात्मा के साथ सम्पर्क नहीं हुआ न हो सकता है। यह भी स्मरण रहे कि सांसारिक जीवन में भी सदाचारिणी स्त्रियों के द्वारा ही जन्नत क़ायम रह सकता है। बिबाह से पहिले उन्हें न किसी मनुष्य ने छुआ हो न जिनने यह भाव जो कई आयतों में वर्णित हैं, इसका येथार्थ आशय यही है कि कन्या ने बिबाह से पहिले पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन

किया हो और बिबाह हुये पीछे भी पुरुष और स्त्री विशेष नियमों का पालन करते हुये ही समागम करें। पति पत्नी सुख पूर्वक जीवन व्यतीत भी इसी अवस्था में कर सकते हैं। विवाहित पुरुष स्त्री भी यथार्थ बिधि को भूल कर भोग करते हैं तो कामातुर तथा व्यभिचारियों वाले दुष्परिणाम ही भोगते हैं और इस अवस्था में न पुरुष सदाचारी और जन्नती हो सकते हैं और न स्त्रियां सती वा सदाचारिणी कहला सकती हैं।

६—मुक्ति की नित्यता

जन्नत के विषय में अनेक स्थानों पर कुरआन में यह शब्द आते हैं:—'ख़ालिदीना फ़ीहा,' कई जगह अबदन का शब्द आता है। इस से यह परिणाम निकाला जाता है कि मुक्ति नित्य है इस से पुनरावृति न होगी। परन्तु यह आशय सत्य नहीं हो सकता, क्योंकि प्रत्येक वस्तु के साथ जो शब्द प्रयुक्त होता है उसका आशय उस वस्तु के स्वाभाविक गुण की सीमा से आगे नहीं जा सकता। हम अपने छोटे से जीवन में 'हमेशा' का शब्द प्रायः ऐसे समय के लिये प्रयुक्त करते हैं जो इस जीवन का दशांश क्या शतांश भी नहीं होता। छः मास यदि हम एक ही नियत समय पर भोजन पाएं तो कहते हैं हम हमेशा ११ बजे तक खाना खा लेते हैं। यदि किसी द्रिद्र पुरुष को हम १०) रु० मासिक हमेशा के लिये सहायता देना स्वीकार करें तो इस हमेशा का अर्थ यही होगा कि जब तक उसको आवश्यकता है, अथवा जब तक देने वाला जीवित है वा दे सकता है। अतः सदा के लिये जन्नत में रहने का भी यही आशय है कि सांसारिक स्वर्ग

में रहेगा जब तक उसका यह जीवन है अथवा रूहानी जन्नत में रहेगा जब तक ईश्वरीय न्याय नियम के अनुसार अल्पज्ञ जीव को मोक्ष सुख मिलना चाहिये और इसीलिये कई आयतों में तहय्यत शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ है 'चिरकाल तक स्थिर रहने वाला जीवन'। जीवात्मा के लिये वह नित्यता सम्भव ही नहीं जो परमात्मा के लिये है। वाइसराय को भी नियत मासिक वेतन मिलता है गवर्नर को भी, तहसीलदार को भी और चपड़ासी को भी। यदि यह कहा जावे कि वाइसराय, गवर्नर, तहसीलदार, चपड़ासी सब सरकार से वेतन पाते हैं तो इसका यह आशय न होगा कि सब का वेतन एक ही है। इसी प्रकार यदि कहा जावे कि हस्पताल के डाक्टर, कम्पौंडर, नर्स, भृत्य और रोगी लोग सब एक बजे से पहिले खाना खा लेते हैं तो इसका यह अर्थ न होगा कि सब को एक ही खाना मिलता है अतः प्रत्येक शब्द का भाव उस सत्ता की यथार्थ स्थिति से सम्बद्ध है जिसके लिये वह प्रयुक्त हुआ है और मुक्ति की नित्यता जीवात्मा के लिये नियत मुक्ति काल के अनुसार ही सीमित रहेगी।

१०—कहाँ आत्मिक आनन्द और कहाँ विषय सुख

क़ुरआनी आयतों में अनेक बार यह ज़िक्र आया है कि जन्नत में न दुःख होगा न कष्ट, न परिश्रम, न थकान, न मौत। जहाँ चाहेंगे रहेंगे जो चाहेंगे पाएँगे। वहाँ कोई असत्य का व्यवहार न होगा। अमृत पीने को मिलेगा, चिरस्थाई निआमतें मिलेंगी, ईश्वर की ही स्तुति तथा महिमा महान् होगी। ईश्वरीय

इच्छा, प्रसन्नता तथा दयालुता ही मनुष्य के साथ होगी। इस प्रकार के सारे शब्दों को लक्ष्य रखते हुये कौन पुरुष इसे स्वीकार कर सकता है कि कुरआनी जन्नत से विषय वासना का सम्बन्ध जोड़ने वाले लोग सत्य मार्ग पर हैं। इन वासनाओं के दास न दोष-युक्त व्यवहारों से बच सकते हैं, न दुःख, थकानादि से। अतः शुद्ध आत्मिक आनन्द और ईश्वर की समीपता ही मुक्ति के विशेषण हैं।

११—भूषण, बरतन, कपड़े

सोने-चांदी के भूषण, बरतन और रेशमी कपड़े यदि विचार से देखें तो सांसारिक स्वर्ग में पूर्व कर्मों के बदले में मिलते और नेक लोगों के लिये सुखदायीं तथा उनकी उच्चता का प्रमाण होते हैं। धनवान होना सुख में सहायक होता है और अपने सांसारिक ऐश्वर्य से दूसरों को सुख पहुँचा कर मनुष्य यश और कीर्ति का भागी बनता है। पर आत्मिक मोक्ष की दृष्टि से सांसारिक ऐश्वर्य का सर्वथा कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। जैसे अग्नि के आधिभौतिक अर्थ आग और सूर्य के हैं और अध्यात्मिक अर्थ विद्या तथा ज्ञानी पुरुष के, उसी प्रकार प्राकृतिक स्वर्ग में जो सोना-चांदी आदि पदार्थ है आत्मिक स्वर्ग में वह ज्ञान, शुभ संस्कार, ईश्वर प्राप्ति तथा आनन्दादि का आशय रखते हैं।

१२—सर सय्यद अहमद और क़ुरआनी जन्नत

तफ़सीरुल क़ुरआन में सर सय्यद साहिब ने क़ुरआन में वर्णन किये गए बहिश्त पर बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया है

और ३१ पृष्ठ पर बहिश्त की यथार्थ स्थिति को इस आयत के शब्दों में समझाया है कि—'फ़ला तालमु नफ़सुम्मा उख़फ़िअ लहुम्मिन क़ुर्रते आयुनि जज़ाउन बिमा कानूऽ यामलूना। (सू० सिजदा, आ० १७) अर्थात् कोई नहीं जानता कि क्या उनके लिये आँखों की ठण्डक (सुख) छिपा रखी गई है'। इस 'क़ुर्रते आयुन' की व्याख्या आप बुख़ारी और मुस्लिम के प्रमाणों से इस प्रकार करते हैं कि "परमेश्वर ने फ़रमाया कि तय्यार की है मैंने अपने भक्तों के लिये वह चीज़ जो न किसी आँख ने देखी है और न किसी कान ने सुनी है और न किसी मनुष्य के मन में उसका ख़्याल गुज़रा है। अतः यदि बहिश्त की हक़ीकत यही बाग़, नहरें और मोती के और चाँदी सोने की ईंटों के मकान और दूध, शराब और शहद के समुद्र, स्वादु मेवे, सुन्दर स्त्रियां और लौंडि हों तो यह कुरआन की आयत और ईश्वरोक्त स्थिति के सर्वथा विरुद्ध है, क्योंकि इन्हें मनुष्य जान सकता है और यदि मान लें कि ऐसी उत्तम वस्तुएँ न आंखों ने देखीं, न कानों ने सुनीं तो भी 'व ला ख़तरा अला क़ल्बे बशरिन' से ख़ारिज नहीं हो सकतीं। उत्तम होना एक सापेक्ष गुण है और जब इन सब पदार्थों का नमूना दुनिया में मौजूद है तो उसके किसी सापेक्ष गुण को जहाँ तक कि तरक़्क़ी देते जावें मनुष्य के मन में उस का ख़्याल गुज़र सकता है; पर बहिश्त की स्थिति इस प्रकार कही है कि 'ला ख़तरा अला क़ल्बे बशरिन' अतः बहिश्त की यह सब वस्तुएँ जो वर्णन हुई हैं वास्तव में बहिश्त में जो क़ुर्रते आयुन होगा उसके समझाने के लिये मानवीय विचार शक्ति के

अनुसार यह दृष्टान्त मात्र है, न कि बहिश्त की हक़ीकतें। इसके पीछे आप हेतु देते हैं कि जो पदार्थ देखे व सुने न गए हों उनकी न समझ आ सकती है न पुरुष विशेष के शब्दों में उन्हें वर्णन किया वा समझाया जा सकता है' तो भी जब मनुष्य को किसी काम के करने न करने को कहा जावे तो उसकी तरफ़ राग या द्वेष होनेके विषय में लाभ-हानि को समझने का वह पुरुष इच्छुक अवश्य होता है। इसलिये प्रत्येक सुधारक दृष्टान्त वा उदाहरण वा अलङ्कार से लाभ-हानि बताता है। 'कुर्रते आयुन' की यथार्थ स्थिति आदि को बताना तो एक कठिन सी समस्या है इसलिये नबियों ने उन सुखों, वासनाओं, दुःखों और क्लेशों को जो मनुष्य के ख़्याल में ऐसे हैं कि उनसे अधिक हो नहीं सकते, कर्मों के सुख-दुख रूप फल के रूप में वर्णन किया है और आशय उनसे हूबहू उन्हीं चीजों का नहीं है, अपितु जो सुख, दुःख, आनन्द व क्लेश उनसे प्राप्त होता है उस कैफियत को कुर्रते आयुन से अलङ्कार के तौर पर वर्णन करना अभिप्रेत होता है चाहे वह उदाहरण कैसा ही निकृष्ट तथा तुच्छ हो।

यह समझना कि जन्नत एक बाग़ के रूप में पैदा की गई है। उसमें सङ्गमरमर के और मोती के जड़ाऊ महल हैं। बाग़ में हरे-भरे तथा फले-फूले वृक्ष हैं। दूध, शराब और शहद की नदियाँ बह रही हैं। सर्व प्रकार के मेवे खाने को मौजूद हैं। साक़ी और साक़नीन (पिलाने और पीने वाले) अति सुन्दर चाँदी के कङ्गन पहने हुये जो हमारे हां की घोसनें पहनती हैं, शराब पिला रहे हैं। एक जन्नती एक हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है। एक ने

रान पर सिर धरा है। एक छाती से लिपटा रहा है। एक ने जीवनदाता लब का बोसा लिया है। यदि बहिश्त यही हो तो बिना किसी आपत्तिके हमारे ख़राबात (चकले) उससे हज़ार दर्जा अच्छे हैं।"

पृष्ठ ३४ पर पुनः आपने सिद्ध किया है कि इसलाम के प्रवर्तक का इन चीजों के बयान से केवल उच्च कोटि के सुख का मानवीय बुद्धि की शक्ति भर ख़याल पैदा करना अभिप्रेत था यह नहीं कि सचमुच वह चीजें बहिश्त में मौजूद हों। और तिरमज़ी की निम्नलिखित रवायत प्रमाण में पेश की है:—"एक मनुष्य ने आंहजरत से पूछा कि क्या बहिश्त में घोड़ा भी होगा? आपने फरमाया तू सुर्ख याकूत के घोड़े पर जहां चाहेगा सवार होकर उड़ता फिरेगा। फिर एक और मनुष्य ने पूछा हज़रत वहां ऊँट भी होगा। आपने फ़रमाया वहां जो कुछ चाहोगे सब कुछ होगा।" अतः इस उत्तर का यह आशय नहीं है कि सचमुच बहिश्त में घोड़े और ऊँट मौजूद होंगे अपितु केवल उन लोगों के ख़याल में उस उच्च कोटि के सुख का ख़याल पैदा करता है। जो उनके विचारों, उनकी बुद्धि, उनकी समझ तथा उनके स्वभाव के अनुसार आला दर्जे का हो सकता था।

१३—बयानुल क़ुरआन की सम्मति

व्याख्या में मतभेद होने पर भी मौलाना मुहम्मद अली साहिब ने सिद्धान्त की दृष्टि से सरसय्यद के अनुसार ही सम्मति दी है। आप जन्नत शब्द को ज़न से बना हुआ मानते हैं और इसका अर्थ यह पेश करते हैं, किसी चीज़ का बाह्य इन्द्रियों से

छिपा रखना (ग़) हम ऊपर कह आये हैं कि जन्नत में पहिली निश्रामतों से मिलती जुलती निश्रामतें मिलने का आशय यह है कि सांसारिक स्वर्ग में प्राकृत्तिक निश्रामतें मिलेंगी. जो इन्द्रियों से ग्राह्य है। परन्तु मुक्ति में सूक्ष्म निश्रामतें होंगी जो आत्मिक आनन्द देंगी और मौलाना साहिब ने जो अर्थ पेश किये हैं वह स्पष्ट रूप से इसी भाव की पुष्टि करते हैं। आगे लिखा है बहिश्त का चित्र जो कुरआन करीम ने खींचा है वह मानो दृष्टान्त मात्र है इसलिये कि जन्नत की निश्रामतें मनुष्य की बाह्य इन्द्रियों से गुप्त रखी गई हैं (ग़) जैसा कि जन शब्द के अर्थ बताते हैं और कुरआन करीम ने इस छिपाने को दूसरे स्थान पर आप इन शब्दों में वर्णन किया है:—

'फ़लातालुमु नफ़सम्मा उख़फ़िया लहुम्मिन कुर्रते आयुने।' (सू० सिजदह, आ० १७) इसके आगे अलअन्हारादि को भी दृष्टान्त मात्र ही माना है। पृष्ट ३६ पर भी यही बताया है और इब्न अब्बास से रिवायत पेश की है कि जो चीजें जन्नत में हैं वह नाम के अतिरिक्त जन्नत की किसी चीज़ से मिलती नहीं। फिर हदीस सही और .कुरान से सरसय्यद अहमद साहिब वाले हवाले पेश करके अन्त में यह परिणाम निकाला है कि जन्नात से मुराद ऐसे बाग़ तो नहीं जैसे यहाँ हैं और न नहरों से मुराद ऐसी ही पानी की नहरें हैं ,वह क्या हैं इस विषय का ज्ञान नहीं होगा। निस्संदेह आत्मिक अनुभव से सम्बन्ध रखने वाला आनन्द शारीरिक इन्द्रियों से ग्रहण ही नहीं हो सकता। उसे शब्दों में वर्णन करना मनुष्य की शक्ति से ही बाहर है। पृष्ठ ३६ धारा

३६ में मुतशाबा और मुतहरा के सम्बन्ध में नोट पेश करने के पश्चात् लिखा है।

'ख़ालिदूना' ख़ुल्द से है और खुलूद का अर्थ है किसी चीज़ का फ़साद के वाक़ा होने से बचा रहना और उसका उस हालत पर क़ायम रहना जिसमें कि वह है (ग़) और 'ख़ुलूद फ़िल जन्नत' का अर्थ इमाम राग़ब की सम्मति में यही हैं अर्थात किसी चीज़ का उसी हालत में बाक़ी रहना जिस पर कि वह है, बिना किसी विकार के उपस्थित होने के। दूसरे शब्दों में यह कि वहाँ इस जगत की तरह अधोगति नहीं है। और रूहुल मुआनी में है कि खुलूद मुअतज़िला के नज़दीक चिरकालीन जीवन है चाहे वह दूर हो जावे चाहे न हो। (मौलाना साहिब जो नजात (मुक्ति) को अनन्त मानते हैं, उसका उत्तर अन्य स्थान में विस्तार रूप से दिया गया है। यहाँ अनेक अन्य स्थानों की तरह वह स्वयं मुक्ति के अनित्य होने का परिचय देते हैं)।

जन्नत के फलों के विषय में यह कहना कि यह वह है जो हमें पहले दुनि।। में दिया गया था, यह आशय नहीं रखता कि वह सांसारिक फल होंगे, क्योंकि वह फल तो सब मोमनो को जगत में मिलते हैं। अतः आशय शुभ कर्मों के संस्कारों से है जो मोमन का आत्मा यहाँ भी ग्रहण करता है और मुतशाबह (मिलता जुलता) होने से अभिप्राय यह है कि चाहे वह आखि-रत (परलोक) के फल अलग होंगे, पर शुभ कर्मों के मुतशाबह (अनुकूल) होंगे, जिस तरह बुराई का दण्ड उसके अनुकूल है उसी तरह भलाई का फल भी उस शुभकर्म से मिलता जुलता है।

१४—इस्माइलुलतफ़सीर की सम्मति

आमाल (शुभ कर्मों) और ईमान सालिह (सत्य धर्म) के साथ जो नेक बन्दा इस दुनिया से गुज़रता है उसके साथ अनेक प्रकार की कामनाएं तथा वासनाएँ होती हैं जो शारीरिक शक्तियों के साथ उत्पन्न हुई थीं, वह अब आध्यात्मिक जगत में सादृष्यता को धारण करके पेश आती हैं जैसा कि मुतशावह शब्द से विदित होता है। जो शारीरिक वासना फल, दूध, शहद, और बीबियों के रूप में गिनाई गई हैं उनकी यथार्थ स्थिति सांसारिक पदार्थों से भिन्न प्रकार की है जैसा कि बीबियों के सम्बन्ध में कहा है कि वह मुतहरा (पवित्र) होंगी। ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसका स्वाद नहीं बदलेगा। ऐसे पानी की नहरें होंगी जो सड़ने वाला नहीं। शराब ऐसी होगी जो स्वयं शुद्ध और दूसरों को शुद्ध रखने वाली है, जिससे न तो बदमस्ती हो न नशा। बीबियाँ अनुकूल आयु वाली होंगी, कोई झूठी बात वहाँ न होगी। सब प्राकृतिक पदार्थ परिवर्तनशील तथा नाशवान हैं, पर वह कभी न बदलेंगी और न उनका विनाश होगा। इन वासनाओं को विचार-शील पुरुष स्वप्न और समाधि की अवस्था में इस जीवन में भी अनुभव करते हैं जैसा कि क़ुरआन करीम फ़रमाता है:—व लिमन ख़ाफ़ा मक़ामा रब्बिही जन्नताने, ५५। ४६। उस मनुष्य के लिये जो अपने रब्ब से डरता है दो जन्नत हैं अर्थात् एक इस लोक में और दूसरा परलोक में। यथार्थ स्थिति बहिश्त की यही है कि श्रेष्ठ पुरुष की जो कामनाएँ हों वह सब पूरी हों। मनुष्यों की कामनाएँ अपने २ मज़ाक़ (प्रवृति) तथा स्वभाव के

अनुसार भिन्न २ प्रकार की होती हैं, इसलिये जिस २ प्रकार की कामनाएँ किसी भले पुरुष के मन में बहिश्त के अन्दर पैदा होंगी, वह सब पूरी की जायेंगी, चाहे वह वासनाएं शारीरिक और आत्मिक मिली-जुली हों चाहे केवल मात्र आध्यात्मिक।

१५—सारे लेख का सार

विस्तारमय अधिक प्रमाण देने से रोकता है अतः लेख का केवल यह सार मात्र उपस्थित कर देना ही पर्याप्त है कि क्या स्वयं क़ुरआन और क्या उसके अनेक विचारशील भाष्यकार, इस विषय में सहमत हैं कि क़ुरआनी जन्नत का वर्णन क़ुरआन में दृष्टान्त रूप में किया गया है। परन्तु साथ ही इस बात के लिये भी पर्याप्त संकेत दिये हैं कि उसका आन्तरिक भाव भी प्रत्येक बुद्धिमान की समझ में आ जाये। और जब स्थिति यह है तो ७० हूर, ७२ ग़ुलमान, पाश्विक विषय-वासना की तृप्ति, इस जगत की प्राकृतिक निआमतें, सांसारिक फल, पानी की अथवा दूध, शहद वा शराब की नहरें, जो सर्व-साधारण में इस जगत से किसी पृथक जन्नत में प्रसिद्ध की जा रही हैं, स्पष्ट रूप से क़ुरआन के आशय के विरुद्ध हैं, अतः इन वाह्य शब्दों के आन्तरिक आशय को समझना और सूक्ष्म आध्यात्मिक निआमतों का आत्मा से सम्बन्ध मानना मुक्ति पर विश्वास रखने वालों के लिये आवश्यक है। फिर इन आध्यात्मिक निआमतों की यथार्थ स्थिति क्या है और जन्नत का शब्द तथा क़ुरआन वाला बयान क़दीम से किस तरीक़े पर माना जाता है, इसको भली भाँति समझने के लिये आवश्यक है कि वेद से स्वर्ग सम्बन्धी वर्णन पेश करके

असल विषय की सारी पेचेदगियों को हल किया जावे। चूँकि कुरआन क़दीम (सनातन) धर्म को ही मानता है और उसी की शिक्षा की तसदीक़ करने का दावा करता है इसलिये .कुरानी जन्नत के यथार्थ आशय को समझने के लिये वैदिक स्वर्ग पर विचार होना परमावश्यक है।

१६—वैदिक स्वर्ग

क़ुरआन में जन्नत शब्द शारीरिक तथा आत्मिक दोनों प्रकार की सफलता के लिये प्रयुक्त किया गया है। बहिश्त में सारे सांसारिक सुख, उत्तम पदार्थ तथा मान्सिक शान्ति आदि फल मिलते हैं तो मुक्ति में ज्ञान, आत्मिक आनन्दादि का प्रवाह चलता है। वेद में भी स्वर्ग शब्द इन दोनों अवस्थाओं के लिये आता है। स्वर्ग शब्द स्वः (सुख) से बना है। 'सुखं गच्छति यस्मिन स स्वर्गः' अर्थात जिस में सुख की प्राप्ति हो वह स्वर्ग है। अतः प्रत्येक अवस्था तथा प्रत्येक स्थान जिस में मनुष्य सुखी रहता है और दुख से बचता है स्वर्ग है। आत्मिक स्वर्ग के लिये मुक्तिका शब्द है। इसका अर्थ भी दुखों से छूटना है। सांसारिक जीवन में भी मनुष्य किसी विशेष बंधन से छूटता है तो कहता है 'मैं इससे मुक्त हो गया'। और सुख मिलता है तो कहता है 'मैं स्वर्ग में हूं' आत्मा के लिये सर्वोत्कृष्ट सुख का आदर्श यह है कि वह शरीर अर्थात जन्म मृत्यु के बंधन से छूट कर सर्वसुख तथा आनन्द स्वरूप प्रभु की संगति से आनन्द प्राप्त करे। अतः साधारण सा विचार ही निश्चय कराता है कि वेद और कुरआन के स्वर्ग और जन्नत के दो शब्द एक ही आशय को प्रकट करते हैं।

अरबी और संस्कृत भाषा में जो अन्तर है उसीके अनुसार कुरआनी जन्नत तथा वैदिक स्वर्ग की व्याख्या में अन्तर होना अनिवार्य्य है तथा व्याख्याताओं के विचारों एवं उनकी योग्यता का अन्तर भी व्याख्या में भेद होने का कारण होना आवश्यक है। वैदिक शब्द यौगिक हैं पर अरबी आदि किसी अन्य भाषा के शब्द विस्तृत अर्थ तथा सम्बन्ध के द्योतक नहीं हो सकते। तथापि मौलिक सिद्धान्त की दृष्टि से जन्नत और स्वर्ग के आन्तरिक भाव की एकता का साक्षातकार कुछ कठिन नहीं हो सकता। हम इसके लिये कुछ वेद मंत्र पेश करके साथ के साथ इस विषय पर प्रकाश भी डालते हैं। आशा है हमारे संकेतों का बुद्धिमान पुरुष स्वयं भली प्रकार विचार एवं अर्थ विस्तार कर सकेंगे।

१७—स्वर्ग का अधिकार

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्टं वामदेव्यमुदरमोदनस्य।
छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्ठारी जातस्तपसोधि यज्ञः ॥१॥

यह अथर्ववेद कांड ४ सू० ३४ का पहिला मंत्र है जिसका अर्थ यह है:—

यज्ञ का सारे ब्रह्मांड में विस्तार हो रहा है। यह तप से प्रकट होता है। यह ऐसा ओदन है कि ब्रह्म (वेदज्ञान) उसका सिर है। ब्रह्मांड इसकी पीठ है। जीवधारी स्थावर जंगम संसार इसका पेट है। ज्ञान और कर्म नाम इसके २ पक्ष हैं। और सत्य इसका मुख है।

१८—यज्ञ और ओदन

वेद का यज्ञ शब्द बहुत विस्तृत अर्थ रखता है। इसी अर्थ

का संकेत कराने को देव पूजा, संगति करण और दान के शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं। पूजा का अर्थ भक्ति, सत्कार, सदुपयोगादि है। परमेश्वर सब से बड़ा और केवल मात्र उपास्य देव है। विद्या, सदाचार तथा आयु आदि की दृष्टि से भी सारे बड़े लोग देवता हैं और इसीलिये ईश्वर पूजा तथा वृद्धों का सत्कार देव पूजा में है। इसी प्रकार सांसारिक पदार्थों में भी अपने २ विशेष दिव्य गुण हैं जिन से मनुष्यों का बड़ा उपकार होता है। अतः उनका सदुपयोग भी देव पूजा के अन्तर्गत हैं। दूसरे अर्थ यज्ञ के संगतिकरण अर्थात मिलाने के हैं। परमेश्वर की सारी रचना में परमाणुओंका संगतिकरण होरहा है। पर मेल पृथकत्व (जुदाई) की अपेक्षा रखता है। परमाणु पृथक न हों तो मिलें कैसे। सूर्य्य की रश्मियां सारे पदार्थों के सूक्ष्म अणु पृथक करके ऊपर को उठा लेजा रही हैं। अग्नि एक फ़ीट ठोस लकड़ी को मीलों तक फैलने वाले अणुओं (धुआँ) के रूप में पृथक करती है। उत्पत्ति है तो विनाश भी है। जमा के साथ तफ़रीक़, जरब के साथ तक़सीम, लेने के साथ देना और संयोग के साथ वियोग है इसी प्रकार संगति करण के साथ दान है। मनुष्य थोड़ा सा भी विचार करे तो उसे विदित हो सकता है कि संसार में दृष्टि गत होने वाले सारे व्यवहार इन्हीं तीनों में से किसी न किसी अर्थ के अन्तर्गत हैं।

इसी यज्ञ का एक नाम ओदन है जिसे दिव्य गुणों तथा शक्तियों का समष्टि रूप कह सकते हैं और उसके विस्तृत सम्बन्ध को वर्णन करने के लिए वेद कहता है:—ज्ञान उसका सिर है।

ज्ञान इस सृष्टि में वह उच्च पद रखता है जो मनुष्य शरीर में सिर रखता है। यही सब का पथ प्रदर्शक गुरु और सब से अधिक सम्मान एवं सत्कार का पात्र है। इसी के कारण चारों वर्णों में ब्राह्मण का और ब्राह्मणों में संन्यासी का पद ऊंचा है। गुरु नानक जी इसी भाव को वर्णन करने को कहते हैं, "वेद शास्त्र सिर तेरा सृष्टि चरण समानी" सिर के पीछे प्राकृतक शक्तियों का गोदाम घर (Store House) पीठ है। इस के मुकाबले पर यज्ञ वाले ओदन का गोदाम घर सारे ब्रह्मांड को कहा है। परन्तु पीठ की शक्ति का सारा रहस्य पेट के काम में है। सारे भक्ष्य वा भोज्य पदार्थ पेट में ही जाकर हज़म होते और पीठ को शक्ति देते हैं। इसके लिए जंगम स्थावर जीव धारी प्राणि पेट के स्थान में कहे हैं क्योंकि वही सारे पदार्थों को अपने उपयोग म लाते हैं। फिर छंद या वेद मंत्रों में प्रत्येक कार्य्य को ज्ञान के अनुसार करने की शिक्षा है अतः ज्ञान और कर्म नाम दो पक्ष कहे गये और मुख से इनको ज्यों का त्यों वर्णन किया जाता है, इसलिए सत्य को इस ओदन का मुख कहा है।

सार यह कि वेद के अनुसार स्वर्ग का अधिकार ज्ञान, कर्म और सत्य पर निर्धारित है।

१६--कुरआन में यही विषय

कुरआन वेद की इस रहस्य पूर्ण एवं सार गर्भित वाणी को इन अति सरल शब्दों में वर्णन करता है।(धारा २—प्रमाण १) बधाई दो उनको जो सत्य ज्ञान को मानते (ईमान लाते) और श्रेष्ठ कर्म करते हैं।

(प्रमाण ६) जो मनुष्य ईश्वरीय (वैदिक) व्रत का पालन करते हैं अपने व्रत को भंग नहीं करते, उसे ही प्राप्त करते हैं जिसके प्राप्त करने का ईश्वर ने आदेश किया है और अपने प्रभु तथा कर्म सम्बन्धी हिसाब के दोषों से डरते हैं अपने रब का ही ध्यान तथा सन्तोष को धारण करते हैं, नमाजें पढ़ते और ईश्वर के दिये हुए रिज़क अर्थात् धर्मानुकूल कमाई में से गुप्त अथवा प्रकट हर प्रकार से दान और बुराई के बदले में भी भलाई करते हैं वही जन्नत के अधिकारी हैं। (प्रमाण १३) बागों वाला जन्नत वह है जो दयालु प्रभु ने अपने सूक्ष्मदर्शी तथा प्रोज्ञप्रिय भक्तों के लिए नियत कर रखा है। इस जन्नत का वारिस हम अपने संयमी भक्तों को बनाते हैं।

(प्रमाण १५) सत्यज्ञान के प्रेमी तथा श्रेष्ठ कर्म करने वाले जन्नत के रौजों में आनन्द भोगेंगे ।

इस प्रकार के सारे प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि कुरआन भी वेद की तरह सत्यज्ञान, सदाचार एवं श्रेष्ठ कर्मों पर ही जन्नत की प्राप्ति मानता है ।

२०—स्वर्ग में बहुत स्त्रियां

अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपि यन्ति लोकम् ।
नैषां शिश्नं प्रदहति जात वेदाः स्वर्गे लोके बहुस्त्रैणमेषाम् ॥२॥

अस्थियां जिनकी नजर न आती हों अर्थात् हृष्ट, पुष्ट और बलिष्ठ ब्रह्मचारी, पवित्र आचरण युक्त, प्राणायामादि से शुद्ध और नीरोग तथा पवित्र मनवाले पुरुष इस पवित्र लोक(गृहस्थ)में प्रविष्ट होते हैं। उनका प्राप्त किया हुआ ज्ञान उनकी काम शक्ति को नष्ट

नहीं होने देता। चाहे इस स्वर्ग लोक में उनके आस पास बहुत स्त्रियाँ रहती हों।

२१—ख़ूब समझे

इस मंत्र में जो बहुस्त्रैण शब्द आया है उसने उन लोगों को बड़े चक्कर में डाला है जो ब्रह्मचर्यादि के महत्व को अनुभव नहीं कर सकते। उन्होंने समझ लिया कि स्वर्ग में बहुत स्त्रियां मिलेंगी यहां तक कि ७० हूरों का ख़याल प्रसिद्ध हो चुका है। यह स्वर्ग सच्चे अर्थों में इसी गृहस्थ का नाम है। पर अज्ञानवश लोगों ने इसे किसी ऊपर के गुप्त स्थान में मान रखा है। यह बात प्रकट ही है कि स्त्री, बच्चे, मकान, खाने-पीने के सामान, माल, धन सब सांसारिक सुख के हेतु हैं और यह इस जगत में गृहस्थियों को ही मिल रहे हैं। पर इनका उपयोग यथार्थ रूप से न होने के कारण यह दुख का हेतु हो रहे हैं और दुख के इतने आधिक्य से इस जगत को स्वर्ग का कहना उचित न हो सकता था इसलिये स्वर्ग किसी पृथक् और विशेष स्थान में ही समझा गया और चूंकि विषय-आसक्त पुरुषों को पाश्विक भोगों के बिना कुछ लक्ष्य नहीं हो सकता इसलिये उन्होंने जन्नत में भी वैसे ही भोगों के मजे उड़ाने की आशाएँ बांधलीं। संस्कृत के नीतिकार का वचन है कि "कामातुराणाम न भयं न लज्जा" अर्थात कामातुर पुरुषों को न भय रहता है न लज्जा, इसलिये अनेक पुरुषों को कुरआन के गले वह सारी बातें थोपने में संकोच नहीं हुआ यहां तक कि आनरेबल सर सय्यद जैसे इसलाम के कट्टर अनुयायी को भी जन्नत की तुलना चकले से करने की धृष्टता में दोष प्रतीत

न हुआ। फिर जब ७० स्त्रियों का लालच मिला तो शंका हुई कि इतनी स्त्रियों से भोग कोई कर ही नहीं सकता। इसका उत्तर दे दिया गया कि प्रत्येक जन्नति को ७८ या १०० पुरुषों की काम शक्ति मिलेगी। परन्तु स्त्री-पुरुष के पारस्परिक सम्पर्क के जो नियम कुरआन ने वर्णन किये हैं और वैदिक ब्रह्मचर्य की मर्यादा के अनुसार जो अत्यन्त संयमी तथा पूर्ण सदाचारी रहने पर ज़ोर दिया है उसको लक्ष्य में रखकर कोई भी पुरुष इस कहने से बाज़ नहीं रह सकता कि यह सब यार लोगों की अपनी घड़न्तें हैं। कुरआन का फ़रमान है कि स्त्री जब हैज़ से शुद्ध हो चुके तब उस विधि के अनुसार उससे समागम हो जो ईश्वर ने फ़रमाई है और औलाद का पूरा ख़याल रखा जावे। अर्थात् वैदिक सन्तानोत्पत्ति के कर्तव्य को पालने के अतिरिक्त कुरआन स्त्री पुरुष के मेल का कोई उद्देश्य नहीं बताता। सू० नूर में सर्व प्रथम मनुष्यों तथा स्त्रियों को अपनी गुप्त इन्द्रियों को पूरे तौर पर वश में करने की शिक्षा है और सच पूछो तो वेद में ज्ञान प्राप्ति का आधार ब्रह्मचर्य का नियम ही कहा है। इसके अतिरिक्त स्वर्ग प्राप्ति के लिये जो सत्यज्ञान, सदाचारादि की शर्तें ऊपर बताई हैं इसके भी वह बातें सर्वथा विरुद्ध हैं जो ७० हूर और ७२ गुलमान का नाम लेकर कही जाती हैं।

२२—संयम तथा जितेन्द्रियता

बहुत स्त्रियों के शब्द का यह अर्थ नहीं हो सकता कि एक पुरुष को बहुत स्त्रियां मिलेंगी। यदि स्त्रियां बहुत हों तो पुरुष भी तो बहुत हैं। फिर स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध पति-पत्नी का ही नहीं

होता। माता, बहिन, भावज, बेटी, चची, ताई, फूफी, सास, साली, नानी, दादी आदि अनेक प्रकार के रिश्ते हैं। जिस नगर में मनुष्य रहता है उसमें अन्य सारे पुरुषों की इन अनेक रिश्तों वाली स्त्रियां रहती हैं अतः स्वर्ग लोक में बहुत स्त्रियों का शब्द आना साधारण बात है और जो सदाचारी, संयमी, पवित्र आत्मा, ब्रह्मचारी गृहस्थ में प्रवेश करे उसको यह शिक्षा देना भी परमावश्यक है कि गृहस्थ आश्रम में भी वह ब्रह्मचर्य का पूरा ख़याल रखे। वीर्य्य का सन्तानोत्पत्ति के बिना अथवा दिमाग़ी काम के बिना कोई उपयोग होना न चाहिये। स्त्रियों की आस पास विद्यमानता होने से जो ब्रह्मचर्य के विरुद्ध भाव उत्पन्न हो सकता है उसमें सावधान करने के लिये वेद का ऐसी शिक्षा देना ही गृहस्थ को स्वर्गधाम बनाने में सहायक हो सतता है। मन को वश में रखने वाला, जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी कामशक्ति क्या सर्व प्रकार की शक्तियों को संयमी रहने से सुरक्षित रख सकता है। जात वेद. अर्थात् वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययनादि से जो ज्ञान प्राप्त किया है वह ऐसे पुरुष को स्त्रियों में रहते हुये भी गिरने नहीं देता और साथ ही उत्साह बढ़ाने और कर्तव्यारूढ़ करने के लिये एक उत्तम शैली यह भी है कि किसी के सद्गुणों का वर्णन करके उसकी बड़ाई की और कहा जावे कि इस प्रकार के उत्तम गुणों से युक्त जो पुरुष है कब सम्भव है कि किसी प्रलोभन के कारण धर्म या कर्तव्य से च्युत हो। सो वेद ने इस शैली का भी पूरा प्रयोग किया और कहा है कि हो नहीं सकता कि हृष्ट पुष्ट, सदा-चारी, प्राणायामादि करने वाला, पवित्रात्मा ब्रह्मचारी, पवित्र

गृहस्थाश्रम में बहुत स्त्रियों के बीच में रहता हुआ भी ब्रह्मचर्य के व्रत को तोड़े ।

२३—ब्रह्मचर्य की महिमा

वैदिक धर्म में ४ आश्रम हैं और उनमें पुरुष स्त्री के परस्पर के मिलने का प्रायः एक गृहस्थाश्रम में ही अवसर मिलता है। ब्रह्मचर्याश्रम में तो ५ वर्ष की कन्या तक बालकों के गुरुकुल में नहीं जा सकती और वैदिक आदर्श के अनुसार समावर्तन संस्कार के होने तक माता, बहिन आदि की संगत से भी ब्रह्म-चारी परे रहता है। वानप्रस्थ में भी स्त्रियों से मिलने की मनाही है। विशेषावस्था में केवल अपनी बूढ़ी धर्म्मपत्नी को साथ रखा जा सकता है। रहा संन्यास आश्रम, इसमें तो अपनी स्त्री और बाल बच्चे आदि तक से भी कोई सम्बन्ध नहीं रहता लोकैषणा, वित्तैषणा, पुत्तैषणा सब का त्याग करना ही संन्यास का आदर्श है अतः केवल गृहस्थ में ही स्त्री पुरुष के मिलकर रहने का समय है। पर इसमें भी बड़े कड़े नियम हैं। अतः सोचना यह है, कि वेदमें जो इस मेल को इतना सीमित किया हैं अथवा इसे अनेक बंधनों में जकड़ा है इस का कारण क्या है? इस का उतर सपष्ट है कि मनुष्य को जिन वस्तुओं वा व्यक्तियोंको वारवार देखने का अवसर मिलता है या जिनसे अधिक सम्बंध रखने का,उनके लिये उस के हृदय में विशेष प्रकार का आकर्षण उत्पन्न होजाता है। यदि स्त्रियों से मिलने का अवसर मिलता रहे तो वह कामातुर होकर वीर्य्य जैसी बहुमूल्य धातु को नष्ट वा दग्ध कर सकता है। मनुष्य शरीर में सात प्रकार की धातु बनती हैं। हड्डी, मज्जा,

मांसादि सबके बनने के पश्चात् सातवीं वा अन्तिम परम धातु वीर्य बनता है। इसकी महिमा को वैदिक साहित्य में अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है। एक दृष्टान्त दिया जाता है कि मनुष्यों को सुरक्षित रखने के लिये राज्य का प्रबंध है। राजा न हो तो देश वा नगर पारस्परिक अन्याय अत्याचारादि से सर्वथा बरबाद ही होजावें। फिर जहां राजा का होना आवश्यक है वहां बुद्धिमान योग्य मंत्री का होना उस से भी अधिक आवश्यक है, अन्यथा राजा स्वयं बिचार दोष से अन्याय अत्याचार कर सकता है। मंत्री के साथ और कर्मचारी तथा सेनादि भी चाहियें, अन्यथा राज्य के नियमादि का पालन तथा शान्ति का सञ्चालन कठिन है। सार यह कि राजा, मंत्री, कर्म-चारी, सेना आदि राज के सब अंग एक से एक बढ़कर उप-योगी हैं। पर बिचार से देखा जावे तो यह सब कर्म-चारी वेतन के लालच पर काम करते हैं। राजा के पास खजाना भरपूर होतो सब कर्मचारियों को नियत समय पर वेतन मिलता और वह दिल देकर अपना २ काम करते हैं। पर यदि राजा में आचार-दोष आजावे और वह वैश्यागमनादि पापों में धन को लुटादे खजाना में कमी हो, समय पर वेतन न मिले तो कर्मचारियों का; उत्साह भंग होता और काम से उनका दिल उठ जाता है राजा इसपर उन्हें दंड देताहै तो असंतोष और भी बढ़ता है और अन्त में प्रजा में विद्रोह का भाव उत्पन्न होकर शत्रुओं का साहस बढ़ाता है। कोई साधारण सा शत्रु भी आक्रमण करे तो प्रजा उसका साथ देकर दुराचारी राजा के पराजित होने का कारण

बन जाती है। सार यह कि खज़ाने की रक्षा न करना सारे राज्य के नष्ट होने का हेतु हो सकता है और इसका सुरक्षित होना राष्ट्र की सफलता का प्रधान कारण है।

इस दृष्टान्त से शिक्षा यह दी जाती है कि शरीर रूपी नगरी में मन रूपी राजा है, ज्ञान इन्द्रियां मत्री है, कर्म इन्द्रियों तथा दूसरे सब अंग कर्मचारी तथा सेना आदि अंग हैं। इन में से प्रत्येक अंग शरीर रूपी नगरी के सुचारु रूप के काइम रहने में सहायक तथा आवश्यक है पर प्रश्न यह है कि जैसे नगरी के राजाके पास खज़ाना सबसे मुख्य वस्तु है वैसे ही मन रूपी राजा के पास कौनसा खज़ाना है। ऋषि उत्तर देते हैं वह खज़ाना वीर्य्य है। जबतक मनुष्य वीर्य्यवान है तब तक ही सब इन्द्रियों में शक्ति है। दिमाग़ में वह शक्ति रहती है कि गूढ़ बिषयों को मनुष्य प्राप्त कर तथा न्याय, सांख्यादि ऐसे दर्शनों की रचना कर सकता है कि उनके एक एक सूत्र की व्याख्या में बड़े २ विद्वानों को बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। ऐसे ही शरीर हृष्टपुष्ट, चेहरा सुर्ख़ और बाहु बलवान होते है सन्तान सर्वप्रकार से उत्तम पैदा होती है पर ज्योंही बालविवाह अथवा वैश्यागमनादि से मनुष्य इस परमपवित्र शक्ति का ह्रास करता है उसका दिमाग़ चकराने लगता है। चेहरा ज़र्द होजाता है सारे अंग शक्ति-हीन होजाते हैं। कोई सूक्ष्म बिषय समझ में नहीं आता। सरदी गर्मी की बरदाश्त नहीं हो सकती। ज़रा बहाना मिला नहीं कि रोग सिर पर सवार हुआ नहीं। मनुष्य जाति में सैकड़ों क्या हज़ारों नवयुवक जो आज राज-यक्ष्मादि रोगों से मृत्यु के मुख में

जारहे अर्थात् इतनी नगरियों के राज्यों के प्रतिदिन नष्ट भ्रष्ट होने का दृश्य दिखा रहे हैं केवल वीर्य्य जैसी परमधातु के निरादर करने का ही यह परिणाम है।

ऐसे ही वीर्य्य के महत्व के लिये एक और प्रकार से भी विचार होता है। मनुष्य और पशु सब बनस्पति से पल रहे हैं। दूध में निर्विवाद रूप से मनुष्य के लिये अधिक शक्ति है। यह दूध क्या है बनस्पति का सार है। गौ, भैंसादि के अन्दर जिस मैशीनरी की भगवान ने रचना कर रक्खी है, उसके द्वारा बन-स्पती से दूध के रूप में हमें अमृत या सोमरस मिल रहा है। पर घृत दूध का रस है। सेर दूध में से एक छटाँक भर माखन निकलता है। ऋषि कहते हैं यह घृत अनेक प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करता है। पैत्रिक दुर्बलता भी घृत के विधि पूर्वक सेवन करने से दूर हो जाती है। एक विशेष इलाके के अशिक्षित मनुष्यों में इसीलिये एक प्रसिद्ध उक्ति थी कि "जो करे पेओ न करे मां ते न करे पेओ"। फिर घृत में विष को नाश करने की भी अद्भुत शक्ति है। सांप के काटे भी घृत पीने से बच गये हैं। घृत विष को मनुष्य-शरीर में फैलने नहीं देता। फैले हुए को जज्ब करके दस्तादि के द्वारा निकाल देता है और इसलिये यह एक और उक्ती थी कि "सौ चाचा ते इक पेओ, सौ दारू ते इक घेओ" कहां तक लिखें घृत मनुष्य के लिये सचमुच बहुतही उप-योगी वस्तु है। पर ऋषियों का कथन है कि वीर्य्य इस घृतका भी परमसार है। सेरभर घी से अल्प ही धातु वीर्य्य के रूप में मनुष्य शरीर में जमा होती हैं। जब घी इस प्रकार दुर्बलता तथा विषादि

का नाशक है तो वीर्य्य उससे कितना अधिक उपयोगी होगा, यह विचार करना बुद्धिमानों के लिये कठिन नहीं। निस्संदेह वीर्य्य सुरक्षित रहे तो रोग का आक्रमण हो नहीं सकता और हो तो वीर्य्य की शक्ति उसको दूर करने के लिये पर्य्याप्त है। आज जो डाक्टरों आदि का सारा समय चिकित्सा में जाता और मनुष्य रोगों से पीड़ित रहते तथा कमाई का अधिक भाग औषधि आदि में व्यय करते हैं, इन सबसे छुटकारा हो सकता है यदि एक यही कर्तव्य ब्रह्मचर्य रक्षा का पाला जावे, यहां तक कि गृहस्थावस्था में भी गर्भाधान के नियमों की पूरी पावन्दी कीजावे।

२४—क़ुरआन का फ़रमान

वेद के इसी आशय को क़ुरआन अनेक स्थानों में अपनी विशेष शैली में वर्णन करता है। (धारा २—प्रमाण १) 'जन्नत के अधिकारी लोगों के लिये बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं और जब उन्हें इस बाग़ के उत्तम फलों वाले पदार्थ मिलते हैं तो कहते हैं यह तो वह पदार्थ हैं जो हमें पहिले मिले थे।'

जन्नत नाम इसी गृहस्थ वाले स्वर्ग का है। दुनिया को भी बाग़ (गुलशने आलम) कहा जाता है। कुल (ख़ानदान) को भी बाग़ कहा जाता है। जहाँ बाह्य नियामतों की अनेक प्रकार की नहरें हैं, वहाँ वीर्य्यादि तथा आरोग्यतादि आन्तरिक नहरें भी इस गृहस्थ रूपी उद्यान की शोभा हैं और सन्तान तथा दुखादि के स्वादिष्ट फल भी अत्यन्त प्रिय हैं।

इसी प्रमाण में नेक पाक बीबियों के मिलने का वर्णन है। स्त्रियों के सौन्दर्य्य तथा उनके नेत्रादि और शील,लज्जा आदिका भी अद्-

भुत चित्र खींचा गया है। कई स्थानों में निर्दोष चिरस्थाई जीवन का शुभ समाचार है, कई जगह कहा है, स्वर्ग का उत्तम परिणाम सदाचारी धर्मात्मा पुरुषों को मिलता है। प्रमाण १३ में सूक्ष्मदर्शी प्रोक्षप्रिय जनों को स्वर्ग का अधिकारी बताया है; दूसरे स्थान में ईश्वर के अनन्य भक्तों को इस जन्नत का वारिस कहा है। इस प्रकार के सारे वचनों में ब्रह्मचर्य्य तथा जितेन्द्रियता का भाव व्यापक है। तक़वा, परहेज़गारी, ईश्वर की अनन्य भक्ति, सांसारिक विषय वासना आदि के आधिपत्य से बचने का ही नाम है। अज़वाज का शब्द ज़ौज का बहुवचन है और इसका विशेषण तहारत (पवित्रता) कहा है। इसके प्रयोग से सारे आशयको गागर में सागर की भांति बन्द किया गया है। स्त्रियों के तहारत (पवित्राचरण) के गुण का आशय उनका पूर्ण ब्रह्मचारिणी होना ही है। अनेक स्थानों में जो यह कहा कि यह किसी से छुई नहीं गईं, यह भी उनके पूर्ण ब्रह्मचर्य्य तथा निर्दोष कुमारपन का ही द्योतक है। फिर आदर्श पवित्रता स्त्रियों में रह ही उसी अवस्थामें सकती है कि पुरुष ब्रह्मचर्य्यके नियमोंको न तोड़ें, अपनी विवाहिता स्त्री को छोड़कर किसी अन्य की ओर कोई कुदृष्टि न करता हो, न विहित गर्भाधानादि क्रिया के बिना अपनी स्त्री से भी विषय भोग करता हो। अतः इस सीमा तक का पवित्राचरण वेद मंत्र के आशय का ही स्पष्टीकरण करता है।

२५—मन्त्र २ के आध्यात्मिक अर्थ

ऊपर जो अर्थ दिया गया उनका सम्बन्ध इस सांसारिक स्वर्ग से है। पर मन्त्र के आध्यात्मिक अर्थ पर विचार किया जावे तो

आत्मा की मोक्ष प्राप्ति की सर्वोच्च शिक्षा सामने आ जाती है। यह आध्यात्मिक अर्थ इस प्रकार होगा।

'उस अद्वितीय अनुपम परमेश्वर के यथार्थ ज्ञान तथा उसकी उपासना का फल यह होता है कि भौतिक शरीर के बन्धन से मुक्त होकर जीवात्मा उस शुद्ध स्वरूप परमेश्वर के सामीप्य से पवित्र होता और आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर पहुंच कर यथार्थ ज्ञानमय अवस्था को प्राप्त करता है। सारे ब्रह्माण्ड का पूर्ण ज्ञान रखने वाला परमेश्वर भौतिक शरीर और इन्द्रियों को पृथक् करने पर भी मुक्त आत्माओं की आनन्द और सुख का अनुभव करने वाली स्वाभाविक शक्तियों को नष्ट नहीं करता। इसलिये मुक्ति में भी उसे आनन्द भोगने के और भी अधिक साधन मिलते हैं।

२६—भोगेन्द्रियां तथा भोग के सामान

इस मन्त्र में दो शब्द विशेषरूप से विचारनीय हैं शिश्न और स्त्रैण। इनके प्रचलित साधारण अर्थ कामेन्द्रिय तथा स्त्रियां हैं। परन्तु वैदिक शब्दों के यौगिक अर्थों तथा विस्तृत सम्बन्ध की दृष्टि से शिश्न शब्द उन सारी इन्द्रियों वा शक्तियों का प्रतिनिधि है, जिनसे मनुष्य सांसारिक विषयों को भोगता है और स्त्रैण शब्द के अर्थ में वह सब विषय व पदार्थ हैं जो भोगे जाते हैं और इसीलिये इसके आधिभौतिक अर्थ यह हैं कि मनुष्य मन और इन्द्रियों को वश में रखता हुआ ही भोग करे। रहा आध्यात्मिक आशय, इसकी दृष्टि से शिश्न के अर्थ जीवात्मा की स्वाभाविक शक्तियां हैं क्योंकि भौतिक शरीर तो मुक्ति में होता ही नहीं

ओर स्त्रैण का अर्थ वह सर्व प्रकार का आनन्द और वह सारे लोकादि हैं जिन्हें जीवात्मा मुक्ति में स्वेच्छापूर्वक ब्रह्म में विचरता हुआ भोगता है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं:—

(जीवात्मा में) मुख्य एक प्रकार की शक्ति है। परन्तु बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, भीषण, विवेचन, क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, द्वेष, संयोग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन और गन्ध ग्रहण तथा ज्ञान इस चौबीस प्रकार के सामर्थ्य युक्त जीव है। इससे मुक्ति में भी आनन्द की प्राप्ति भोग करता है।' शतपथ कां० १४ के प्रमाणसे जीव के इस भोगने की व्याख्या इस प्रकार करते हैं:—जब सुनना चाहता है तब श्रोत्र, स्पर्श करना चाहता है तब त्वचा, देखने के संकल्प से चक्षु, स्वाद के अर्थ रसना, गंध के लिये घ्राण, सङ्कल्प, विकल्प करते समय मन, निश्चय करने के लिये बुद्धि, स्मरण करने के लिये चित्त और अहङ्कार के अर्थ अहङ्कार रूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है, मनुष्य यदि अपने स्वप्नों पर विचार करे तो वह स्वयं समझ जायगा कि शरीर और इन्द्रियों के प्रयत्न के बिना किस प्रकार जीवात्मा इस अवस्था में सुख दुख का अनुभव करता है। फिर जो काम जागृत अवस्था में शारीरिक इन्द्रियों से लिये जाते हैं। वह भी वास्तव में जीवात्मा की शक्तियों से ही होते हैं। हाथ पैर आदि तो केवल जड़ हैं। अतः जीव के लिये इस जीवन तथा मुक्ति में अन्तर यह है कि इस सांसारिक जीवनमें तो जीव अपने कामके लिये शारीरिक इन्द्रियों के द्वाराही प्रयत्न करसकता है, अर्थात् उसकी स्वाभाविक शक्तियां

बन्धनों में जकड़ी हुई हैं परन्तु मुक्ति में वह सीधा अपनी स्वतन्त्र शक्तियों से आनन्द भोगता है। कुरआन में इन स्वाभाविक शक्तियों को भी अज़वाजे मुतहरा (पाक साथी) कहा है। अज़वाज़ का अर्थ है 'साथ रहने वाली' और जीवात्मा की स्वाभाविक शक्तियां हमेशा उसके साथ रहती हैं। यह सम्भव ही नहीं कि वह कभी उससे पृथक् हों और दूसरे जीव से मिलें। अतः वही सच्चे अर्थों में आत्मा की पाक बीबियां हैं। फिर जब से जीव है तब से उसके साथ होने के कारण वह उसकी हम उमर (सह आयु) भी हैं। रहे भोगने के सामान, सो इस अवस्था में वह स्थूल वा कार्य्य पदार्थ जो इन्द्रियों का विषय है, कारण वा सूक्ष्म अवस्था में आत्मा से ग्रहण किये जाते हैं।

२७--सन्तानोत्पती रूप यज्ञ

वेद मंत्रों में परमात्मा की यह आज्ञा है कि मनुष्य जाति को बढ़ाओ। जैसे जगतोत्पत्ति का यज्ञ परमात्मा ने रचा है वैसा ही मनुष्यों के लिये आज्ञा है कि बढ़ो और फलो। इस को गृहस्थ रूप स्वर्ग के प्रकरण में इस प्रकार वर्णन किया है।

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनानवर्ति सचतेकदाचत।
आसतेयम उपयाति देवान्त्सं गन्धर्वैर्मदते सोभ्येभिः॥

जो मनुष्य सन्तान को बढ़ाने वाला यज्ञ पूर्ण विधि अनुसार करते हैं उन्हें कभी कोई कष्ट नहीं होता। वह मन को बश में रखते हुये जगन्नियन्ता परमेश्वर के आश्रय रहते हैं। सदाचारी विद्वानों का सत्संग करते हैं। बड़े २ ज्ञानियों और सौम्य स्वभाव पुरुषों की संगतिके प्रभाव से आनन्द और ख़ुशी पाते हैं।

२८--सुख का मूल मंत्र

गृहस्थ जिसका नाम स्वर्ग है, सन्तानोत्पत्ति के लिये है, पर विषय वासना की तृप्ति के लिये भोग करते हुए जो सन्तान पैदा होती है वह मनुष्य समाज का विस्तार करने वाले यज्ञ का आशय पूरा नहीं करती। 'पचन्ति' का शब्द यज्ञ के पूर्ण विधि के अनुसार करने की शिक्षा देता है जिसका आशय यह है कि जहाँ तक संयम तथा ब्रह्मचर्य व्रत पालने की सम्भावना हो वहाँ तक पूरा आचरण हो। सन्तान बलवान, नीरोग, बड़ी आयु वाली, विद्या प्राप्ति की पूरी योग्यता रखने वाली होती ही उसी अवस्थामें है कि ब्रह्मचर्य तथा जितेन्द्रियता के नियमों की पूरी पावन्दी हो। ऐसे ब्रह्मचारियों को कभी निर्बलता, रोग तथा सांसारिक साधनों सम्बन्धी कष्ट हो ही नहीं सकता, और विषय भोग में फंसा रहने के स्थान में वह अपना समय बड़े २ विद्वानों की संगति में गुज़ारते, उन्नति करते हुये बड़े से बड़े श्रेष्ट स्वभाव युक्त विद्या कुशल आप्तजनों से शिक्षा ग्रहण करते और असली ख़ुशी तथा मानसिक तुष्टि प्राप्त करते हैं। सार यह कि गृहस्थ में सुखी रहने के लिये 'आस्ते यम' की शिक्षा पर आचरण करना तथा यम रूप हो जाना परमावश्यक है। मनुष्य समझता है कि विषय भोग का सामान मिमने से उसकी तृप्ति होगी पर होता यह है कि जैसे अग्नि पर घी डालने से वह और तीव्र होती है उसी प्रकार विषय भोग के प्रेमी की तृष्णा बढ़ती जाती और वह स्वयं उन भोगों से भुगत जाता है।

२६--तीसरे मंत्र के आध्यात्मिक अर्थ

जो इस अत्यन्त विस्तृति ज्ञान के ओदन वा यज्ञ को कमाल तक पहुंचाते हैं उनको कोई कष्ट नहीं हो सकता। ऐसा मुक्त जीव उस सर्वान्तर्यामी परमेश्वर में रहता है। वह अपने से पहिले मुक्त जीवों से भी मिलता है और सोम अर्थात ब्रह्मानन्द रूप अमृत के पान करने वाले सच्चे ज्ञानियों के साथ ही सच्चा आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है।

ज्ञान का कमाल आवागमन की जड़ को काट देता है अतः अब दुख वा क्लेश कहां। इस ख्याल को कुरआन वर्णन करता है कि स्वर्ग में न दुख होगा न भय। न परिश्रम न थकान। उनके मान्सिक कलेश दूर होंगे। स्वस्ति ही स्वस्ति होगी कोई मिथ्या बात न होगी जो वह चाहेंगे पाएंगे अमृत उन्हें पीने को मिलेगा।

वेद मंत्र में जो यह कहा है कि मुक्त जीव सर्वान्तर्यामी परमेश्वर में रहेगा और पहिले मुक्त जीवों को मिलेगा तथा अमृत पान करने वाले ज्ञानियों से आनन्द प्राप्त करेगा इसको स्वामी दयानन्द इस प्रकार वर्णन करते हैं। 'जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को जीवात्मा भोगता है। वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोक लोकान्तरों में घूमता है।'

इस से स्पष्ट है कि मुक्त जीव नये मुक्त आत्मा का स्वागत

करते और उनको एक दूसरे से मिलने से आनन्द होता है। कुरआन इनही संकेतों को इस प्रकार वर्णन करता है :—

जन्नत के प्रतिनिधि उनका प्रत्येक द्वार से स्वागत करेंगे या बधाई देंगे कि यह उस सबर का फल है जो तुमने किया था। दूसरे स्थान पर लिखा है कि नया जन्नती उन्हें अपनी राम कहानी सुनाता है कि मेरा एक साथी था वह मुझे बहकाता था कि पुनर्जन्मादि कोई नहीं होता। यदि ईश्वर की अनुग्रह मुझ पर न होती तो मैं तवाह ही होजाता। न केवल यह वह दोज़ख की तरफ झांकता अर्थात् अपने शुद्ध ज्ञान से उस सृष्टि को देखता है तो उस साथी को दुखों की आग में जलता हुआ पाता है। इसी प्रकार वेद में जो युक्त जीव के स्वच्छन्द ब्रह्म में बिचरने का वर्णन है, कुरआन में भी इसी के अनुसार कहा है कि हम जहां चाहें रहें।

३०—रूहानी मेराज

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनान यमः परिमुष्णाति रेतः।
रथी ह भूत्वा रथ यान ईयते पक्षी ह भूत्वाति दिवः समेति॥४॥

जो सन्तान वृद्धि के यज्ञ को पूर्ण बिधि से करते हैं वह यम (जितेन्द्रियता वा सर्वान्तर्यामी परमेश्वर) उनकी शक्ति को नष्ट नहीं होने देता, इसलिए वह सच्चे रथी के सदृश रूहानियत के मेराज (उच्चतम आत्मादर्श) को पाता हुआ ब्रह्म लोक को प्राप्त करता है और सत्य ज्ञान तथा कर्म रूप दोनों साधनों (पक्षों) के बल से अनन्त तेज युक्त ब्रह्म में लीन हो जाता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक अर्थ में विद्योन्नति का यज्ञ करने वालों

को वह सर्वान्तर्यामी परमेश्वर अधिक से अधिक योग्यता प्रदान करता और उनके ज्ञान को नष्ट नहीं होने देता अपितु बढ़ाता है।

३१—मनुष्य शरीर रूपी रथ

मनुष्य शरीर को वैदिक साहित्य में रथ से उपमा दी गई है। जिस प्रकार रथ पर सवार होकर मनुष्य अपने अभीष्ट स्थान पर पहुंचता है उसी ,प्रकार आत्मा मनुश्य शरीर के द्वारा मुक्ति की उच्चावस्था को प्राप्त करता है। जो लोग विषय-भोग में रत रहे हैं वह इस रथ की मन-रूपी लगाम पर क़ाबु नहीं रख सकते और उनकी इन्द्रिय रूप घोड़े बे लगाम होकर दौड़ते और रथ को खाई गढ़े में गिराकर चकना चूर करते हैं। वेद ऐसे लोगों को रथी नहीं कहता। हां जो इन्द्रिय रूप घोड़ों को मन की लगाम से भली भांति वश में रखते अर्थात इन्द्रियों पर विजय पाते हैं उनकी बुद्धि तथा होश हवास सब ठीक रहते हैं और वही सच्चे अर्थों में रथी हैं। जीवात्मा इन इन्द्रियों पर क़ाबु पाकर बेखटके अपनी यात्रा करता है, अर्थात सत्य ज्ञान पाता तथा कर्म किये जाता है यहां तक कि अनन्त ज्ञानमय, प्रकाश स्वरूप ईश्वर को प्राप्त करता है। कुरआन हर कहीं मुत्तकी लोगों को उन के ज्ञान, कर्म और धैर्य्य के बदले जन्नत मिलने का वर्णन करता है और प्रमाण सं० १५ सू० रूम, आ० १५ में कहता है :—ईमान लाने तथा शुभ कर्म करने वाले जन्नत के बागों में आनन्द पाएंगे। प्रमाण सं० १७ सू० सबा, आ० ३७, में कहा है जो सत्य को मानकर तदानुकूल आचरण करेगा

उसको कई गुणा अधिक फल मिलेगा उनके कर्मों की वजह से और वह उस उच्चावस्था में शान्तिपूर्वक रहेंगे। प्रमाण सं० १६ सू० फ़ातर आ० ३५ में जन्नतियों की ओर से ईश्वर की स्तुति होने का कारण बताया है कि उसने अपनी अनुग्रह से उन्हें ऐसे उच्चपद पर पहुंचा दिया कि उसमें मुशक्क़त, कष्ट वा थकावट नाम को नहीं। प्रमाण सं० ३१, सू० क़मर, आ० ५५, में कहा है:—जन्नत वाला मुक़ाम क्या है, सिद्क़ वाला मुकाम है, उस सर्व शक्तिमान प्रभु की समीपता में। इसी ख्याल को वर्णन करने के लिये हज़रत मुहम्मद साहिब के मेराज वाली बात है। रथ की जगह बुराक़ कहा गया इसलिये कि परों से उड़े बिना ऊपर पहुँचना, कठिन समझा गया और रथ का उड़ कर ऊपर जाना भी उन्हें युक्त प्रतीत न होता था। फिर वेद में ईश्वर दर्शन या ईश्वर प्राप्ति की उच्चतम अवस्था को अतिदिवः अर्थात् अत्यन्त प्रकाश युक्त स्थान कहा था, उसी को वर्णन करते हुए उन लोगों ने मेराज के अन्तिम स्थान पर तजल्ली (प्रकाश) के वर्णन करने में विचित्र प्रकार की अत्युक्ति आदि से काम लिया है। परोंवाले बुराक़ की कल्पना जो उनके दिमाग़ में आई इसका कारण भी वेद मंत्र में आया 'पक्षौ' शब्द जिसे हमने ज्ञान और कर्म के अर्थ में लिया है दो परों के लिये भी बोला जाता है और इस मन्त्र में रथी के साथ पक्षी का भी शब्द है।

३२—आदर्श सफलता

एष यज्ञानां विततो वहिष्ठो विष्टारिणं पक्त्वा दिवमाविवेश।
आण्डीकं कुमुदं संतनोति बिसं शालूकं शफको मुलाली।

एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गेलोके मधुमत पिन्वमाना।
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणी समन्ताः ॥ ५ ॥

मानव सन्तति की वृद्धि के इस सबसे बड़े यज्ञ को पूर्ण करके मनुष्य सुखमय वातावरण में प्रविष्ट होता है। इस गृहस्थ रूपी सरोवर में गोल कमल, कमल नाल, कमल कन्द तथा अन्य सुन्दर कमलों को उत्पन्न करता है। यह सब सुखदाई धारें स्वर्ग-लोक में तुझे प्राप्त हो। आनन्द बरसाती हुई यह सदा तुझ पर क़ाइम रहें और तुझे पुष्टि व तुष्टि देती हुई तेरा अन्त शुभ करें। ५ ॥ इस मन्त्र के दूसरे अर्थ इस प्रकार होंगे। वह परमेश्वर सब जीवों से सर्व प्रकार से महान, सब स्थानों में विद्यमान तथा व्यापक है, ऐसे अनन्त परमेश्वर के ज्ञान में कमाल पाकर सच्चे विद्वान् मोक्ष धाम में दाखिल होते हैं। वह परमहंस मुक्त जीव मुक्ति धाम में सुख के सारे सामानों को साक्षात देखता है। वह इस सकल ब्रह्माण्ड में व्यापक, आनन्द स्वरूप सबके प्रेरक, कमल कन्द की भान्ति आनन्द कन्द, ज्ञान स्वरूप तथा सकल सृष्टि के आदि मूल में विचरता है। हे मुक्ति के अभिलाषियो! इस सारी सृष्टि को चलाने वाली शक्तियां तुम्हें प्राप्त हों और स्वर्ग में आनन्द युक्त अमृत को पैदा करके सर्व प्रकार से आत्मा को बलवान बनाने वाली तथा अच्छे अन्त वाली हों।

२३—सुख की धारें

घृत ह्रदा, मधुकूलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दधना एतास्त्वा० ॥ ६ ॥ चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना। एतास्त्वा० ॥ ७ ॥

घृत वाले, शहद से भरे हुये, सुरा अर्थात् स्वादिष्ट पीने की चीज़ों वाले और दूध दही और जल के भरे हुये कलशों से बहती हुई धारें तुझे प्राप्त हों। यह सब आनन्द तथा सुखदाई धारें स्वर्ग लोक में सब ओर से तुझे प्राप्त हों आनन्द बरसाती हुई यह तुझ पर क़ाइम रहें और तुझे तुष्टि व पुष्टि देती हुई तेरा अन्त शुभ करें। ६॥ चार प्रकार के पदार्थ (दूध, दही पीने की मधुरस युक्त चीज़ों तथा सादा जल के चार कलश मैं तुझे देता हूँ, यह सब (शेष पूर्ववत) दूसरे अर्थः—सत्य ज्ञान और पराक्रम से भरपूर मधुवत प्रिय आत्मिक सुखों से भरी हुई, आनन्द दायक रस युक्त, परम आनन्द रूपी अमृत युक्त, दूध के सदृष अत्यन्त रुचिकर, उच्चावस्था में ले जाने वाली तथा सकल सृष्टि को धारण करने वाली शक्तियों से भरपूर उपरोक्त सब धारें तुझे प्राप्त हों।६॥ सत्यज्ञान से भरे हुये चार कुम्भ(चार वेद) जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नाम चार फलों को देने वाले हैं। ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान के चार काण्डों के लिये मैं तुझे देता हूँ। उपरोक्त (शेष पूर्ववत)

३४—सन्तानरूपी नियामत

गृहस्थरूपी यज्ञ मानव सन्तति की वृद्धि के लिये है अत: सर्व प्रथम ५ वें मंत्र में इस विषय के सम्बन्ध में सफलता मिलने की ख़ुशख़बरी दीहै। पुराणों में विष्णु की नाभि से कमल और कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति का जो वर्णन है वह वेद के इस अलंकार का विस्तृत रूप है कि गृहस्थ रूपी सरोवर में सुन्दर कमल पैदा होते हैं। जल के अन्दर नाल है और गोल सुन्दर

कमल जल के ऊपर हैं। ऐसे ही नीलोफ़र की नाल और गुल नीलोफ़र का हाल है। इसीप्रकार गृहस्थ नाम सरोवरमें खिले हुये कमल की तरह सन्तान रूपी नियामत है। इसी के लिये प्रमाण सं० ३५, सू० दहर, आ० १६ में कहा है कि 'जन्नतियों के इर्द गिर्द हमेशा रहने वाले बच्चे होंगे ऐसे सुन्दर कि तू उन्हें देखे तो बस यही कहे कि बिखरे हुये मोती हैं।' कमलनाल केवल मानव सन्तति के सिलसिले की द्योतक है। हमेशा रहने वाले बच्चे इस भाव से कहे गए हैं कि वह माता पिता के होते हुये मरते नहीं। वर्तमान काल में सन्तानोत्पत्ति के यज्ञ को पूर्ण विधि से न करने के परिणाम रूप में सन्तान दुर्बल होती और अनेक बच्चे अकाल मृत्यु के शिकार होते हैं। पर जब गृहस्थाश्रम स्वर्ग की अवस्था में होता है यह परिणाम हो नहीं सकता।

३५—क़ुरआनी नहरें, चश्मे आदि

धारा २, प्रमाण सं० ७ में कहा है कि इस जन्नत का दृष्टान्त बाग़ से दिया जा रहा है। वेद में इसके लिये ओदन शब्द है जिसका विकृत रूप अदन है। ओदन के प्रचलित अर्थ भात के हैं पर वेद में इसके अर्थ का सम्बन्ध इस विस्तृत सृष्टि रूपी उद्यान या इस में होने वाले यज्ञ से है। इसी प्रकार नहरों और चश्मों के शब्द क़ुरआन की कितनी ही आयतों में वेद के कुम्भ तथा धारा आदि शब्दों के लिये हैं। वेद में दूध से भरे हुये, शहद से भरे हुये कलशों की धारा का वर्णन है तो क़ुरआन में दूध और शहद की नहरें वर्णित हैं वेद में पानी की धार हैं तो क़ुरआन में पानी की नहरें हैं। वेद में शब्द था 'सुरोदकाः' यह

शब्द सारे शर्वतों और अरकोंके लिये है जो आगपर पकाए जाते तथा पीने में स्वादु और रोग निवृत्ति का कारण हैं। कुरआन में उनके लिये शराब का शब्द है। दुर्भाग्यवश आजकल संस्कृत में उस शराब को सुरा कहा जाता है जो नशा करता और बुद्धि का नाश करता है इसी कारण से शराब का सम्बन्ध कुरआनी जन्नत से पढ़ कर लोगों को घृणा होती है। पर वेद में सुरा और क़ुरआन में शराब के अर्थ पीने वाली सारी चीज़ों के है जो अनेक गुण युक्त हैं। कुरआन साफ़ कहता है वह शराब निहायत लज़ीज़ होगी। उस में न नशा होगा न हलाकत, न हानी। आजकल लैमोनेड, जिंजर, रोज़ आदि नामों से जो पानी बोतलों में भरे जा रहे हैं और सारे शर्वत और अर्क सुरोदका: शब्द के अन्तर्गत हैं। इनके लिये कुरआन में जो शब्द प्रयुक्त होते हैं, उन्हें अनुवादक लोग कहीं काफ़ूरी पानी कहते हैं कहीं सोंठ का पानी, और उनके भरे हुये कुम्भों तथा उनकी अधिकाई के लिये कहीं सलसबील का चश्मा कहा है कहीं तसनीम का। फिर इस पीने की चीज़ों को सर व मुहर कहा है और मुहर मुशक की बताई है यह भी आजकल की बोतलों वाली मुहरों और लेबलों से प्रकट है, इत्यादि सब बातों से पाया जाता है कि शराब पीने की चीज़ों का नाम है। शरब का शब्द जो प्रसिद्ध वाक्य 'अकल व शरब' में प्रयुक्त होता है, इसका पूरा प्रमाण है क्योंकि अकल व शरब खाने पीने की चीज़ों का अर्थ रखता है।

३६—नजात वाली नियामतें

सांसारिक जन्नत के लिये जहाँ यह नियामतें हैं, वहाँ नजात

के लिये इनही नामों वाली रुहानी नियामतें हैं और कुरआन जहां यह कहता है कि जन्नत में न शोक होगा, न भय, न परिश्रम, न थकान, वहाँ केवल मुक्तावस्था का सम्बन्ध है। सलामती ही सलामती और सरूर ही सरूर नजात के ही विशेषण हैं। वेद में सांसारिक स्वर्ग वाली दूधादि की नियामतें जीवात्मा की मुक्तावस्था के लिये, कहीं आनन्द और प्रमोद के साधन कहलाती है, कहीं सब कामनाओं की पूर्ति, कहीं भिन्न २ प्रकार की धारें, कहीं अमृत, कहीं ज्ञान, कहीं आत्म बल, कहीं जन्म मरण से छुटकारा, कहीं सच्चे ज्ञानियों का मेल। कुरआन में जन्नत की नियामतों को पाइदार (स्थाई) कहा है, खाने भी स्थिर, साये भी स्थिर, दूध की नहरों का वर्णन किया तो कहा कि उस दूध का स्वाद नहीं बदलता। शराब भी दुनिया की शराब से विलक्षण और भी सारी नियामतें न बदलने वाली। ऐसी नियामतें यथार्थ ज्ञानादि के बिना हो नहीं सकतीं। इसलिये वास्तविक आशय वेदोक्त ज्ञान और आनन्द से ही है जो उस सर्वदा एकरस परमेश्वर के योग से ही प्राप्त हो सकती हैं। वेद में ज्ञानादि की अनेकों धारें बताई हैं, अर्थात् वहुप्रकार की अगिण नियामतें तो कुरआन में भी पुनः पुनः नियामतों का इसी प्रकार वर्णन है।

३७—बहिश्त और उसका फैलाओ

इस्लाम में जन्नत का नाम बहिश्त भी आता है और उसका फैलाओ आसमान और जमीन का फैलाओ कहा गया है (म० सं० ३३, सू० हदीद आयत २१) इसका स्पष्ट आशय यह है कि जन्नत स्थान विशेष का नाम नहीं, अपितु समस्त संसार ही जन्नत

है। हुज्जतुल इस्लाम, अबदुल्ला चकरालवी कृत पृष्ठ ७६ पर लिखा है—जिस जगह जन्नत में उसकी (आदम और उसकी बीबी की) सकूनत का जिकर है वहां जन्नत से दुनिया का बाग़ मुराद है। मौ० अबदुल हक़ साहिब 'वेदों का बहिश्त' में जन्नत और नजात को रूहानियत की सरज़मीनादि कहते हैं। निस्संदेह शुभ कर्म करनेवाले लोग सुख या स्वर्ग ही भोगते हैं चाहे कहीं हों वेद सुख के स्थान को भी स्वर्ग कहता है, सुखकी अवस्था को भी और इसके लिये पुनः पुनः विष्टारिण (अत्यन्त फैला हुआ) शब्द प्रयुक्त करता है यहां तक कि पहिले ही मन्त्र में ज्ञान को उसका सिर, सकल सृष्टि को उसकी पीठ, जीव रूप प्रजा को उसका पेट, ज्ञान और कर्म को उसकी भुजा और सत्य को उसका मुख कहता है और यह वह विस्तार है कि मनुष्य की विचार शक्ति में भी इसका आना कठिन है। यह भी स्मरण रहे कि ५ वें मन्त्र में जो विहिष्ट का शब्द है वही जगत में बहिश्त कहला रहा है और इसके अर्थ हैं सबसे महान, जिससे सिद्ध है कि वेद और कुरआन दोनों में द्यौ से पृथिवी लोक तक की सारी सृष्टि को जन्नत वा स्वर्ग कहा है।

३८—कामधेनु

इममोदनं निदधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोक जितं स्वर्गं।
स मेमाक्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो विश्वरूपा धेनुः काम
दुधा मे अस्तु ॥८॥

मैं उस हर जगह मौजूद स्वर्ग को जो लोक जित् और सकल भलाइयों तथा शक्तियों का केन्द्र है ब्राह्मणों को देता हूँ अर्थात्

ब्राह्मणों के हाथ में स्वर्ग की कुन्जी है। हे परमेश्वर ऐसी कृपा कर कि अन्नादि सर्व प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करके पालने वाला यह ओदन मुझ गृहस्थ के लिए नष्ट न हो। अपितु मेरे लिए यह ऐसी कामधेनु सिद्ध हो कि मेरी सब कामनाओं को पूरा करदे।

३९—ब्राह्मणों का कर्त्तव्य

इस मन्त्र में बड़ी उत्तमता से स्वर्ग प्राप्ति का गुर बताया है और वह यह है कि ब्राह्मणत्व के गुण से ही परमात्मा के नियमानुसार स्वर्ग का अधिकार प्राप्त होता है। ब्राह्मण ज्ञान, तप और सन्तोष से स्वयं भी स्वर्ग में हैं और दूसरे लोगों को अविद्या तथा विषय वासना की दासता से सत्योपदेश के द्वारा बचाकर सुख और आनन्द का अधिकारी बनाते हैं। उनसे मिले हुये ज्ञान के प्रकाश द्वारा सब लोग श्रेष्ठ कर्म करते और धर्मानुकूल कमाई से आराम से गुजर करते, सन्तान की उत्पत्ति तथा उसके पालन पोषण शिक्षा आदि में लगे रहते और संसार को सच्चे अर्थों में अपने लिए स्वर्ग बनाते हैं। दूसरे अर्थों में ब्रह्मज्ञानी हीं मुक्ति का अधिकारी है। यह ब्राह्मणों को इस ओदन या शुभ समाचार मिलने का यथार्थ आशय है।

४०—सब मुरादों का पूरा होना

कुरआन में इस कामधेनु का आशय भिन्न २ प्रकार के वर्णन किया है:—

(प्रमाण सं० १०, सू० नहल आ० ३१) जो कुछ वह चाहेंगे इनके लिये वहां मौजूद होगा।

(प्र० २०, सू० यासीन आ० ५७, ५८) उनके लिये वहां फल होंगे और जो वह चाहेंगे पाएंगे और दयालु प्रभु का शब्द होगा, 'सलामती'। यह फल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के हैं और वेद मंत्रों में ईश्वर की आशीर्वाद जो स्वस्ति स्वस्ति के रूप में हैं, क़ुरआन में उसी के लिये सलामती का शब्द है।

(प्र० २१, सू० साफ़ात, आ० ६०, ६१) निश्चय यही (जन्नत की प्राप्ति सब से बड़ी सफलता है और ऐसी ही सफलता के लिये पुरुषार्थी मनुष्यों को कर्म करने चाहियें (प्र० २४, सू० ६१) जो लोग परहेज़गारी अख़तियार करते हैं, ईश्वर उन की सब कामनाएं पूरी करके उन्हें मोक्ष देगा, उन्हें न कष्ट होगा न कलेश।

४१—लोक जित्

इस मंत्र में स्वर्ग को लोक जितं कहा है और सामवेद ५-५-६ में भी यही आशय वर्णन किया गया है :—

आविर्मर्य्या आवाजं वाजिनो आमनवस्य सवितुःमवम्।
स्वर्गं अर्वन्तो जयत॥

विद्या कुशल मरण शील मनुष्य उस सर्वोत्पादक ज्ञान स्वरूप परमात्मा की ज्ञानयुक्त प्रेरणा से उपकार पाते हैं अतः हे विद्वानो! इस स्वर्ग में फ़तह व नुसरत (विजयादि) के साथ प्रविष्ट हो जाओ।

(प्र० २, सू० एराफ़ आ० ४६) जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम्हें न कोई भय होगा न शोक।

(प्र० २३, सू० काफ़ आ० ३४) सलामती के साथ इस में दाख़िल हो जाओ।

विजयी होकर और सलामतीके साथ जन्नत में दाखिल होना लोकजितं की ही आशय-पूर्ति करता है ।

४२—दो प्रकार का जन्नत

ततं तन्तुमन्वेके तरन्ति येषां दत्तं पित्र्यमायनेन ।

अबन्ध्वेके ददतः प्रयच्छन्तोदातुं चेच्छिक्षान्त्स स्वर्ग एव ॥
अथर्व ६–१२२–२ ।

जिन लोगों ने जगत में पैदा होकर पितृ ऋण चुका दिया है, वह दो प्रकार के हैं । एक तो वह जो सन्तान उत्पन्न कर के ही तर जाते हैं और दूसरे वह जो सन्तान उत्पन्न नहीं करते न विवाहादि के सांसारिक सम्बन्ध करते हैं। तो भी यह ऋण चुकाने वालों के समान ही योग्यता रख सकते हैं। यह लोग यदि अपनी विद्या तथा धन आदि को सब के दाता परमेश्वर के मार्ग में ही खर्च करते हैं तो यही उनके लिये स्वर्ग है ।

४३—कर्त्तव्य पालन

वैदिक सिद्धान्त यह है कि कर्म करते हुये ही जीने की इच्छा करनी चाहिये, यही वह तरीका है जिस में मनुष्य के लिये कर्म बन्धन का हेतु नहीं होते । अतः कर्म सम्बन्धी कर्तव्य पालन करना ही स्वर्ग है । गृहस्थ रूपी स्वर्ग में यह कर्तव्य दो प्रकर से पूरा होता है। एक तो यह कि ननुष्य सन्तानुत्पन्न करके पितृ ऋण से उऋण हो । यह ऋण क्या है माता पिता का हमें जन्म देने का व्यवहार। जैसे हमें जीवित रखने और शिक्षा आदि देने के कारण हम पर देव ऋण और ऋषि ऋण की जिम्मेदारी है उसी प्रकार हम माता पिता के ऋणी हैं और इस ऋण को

चुकाने के कर्तव्य से हम इस प्रकार मुक्त हो सकते हैं कि हम भी बिवाह करके सन्तान उत्पन्न कर और यह सुरक्षरूई एक प्रकार से हमारे लिये स्वर्ग है।

परन्तु जो लोग बिवाह न करने से सन्तानुत्पन्न नहीं करते वह ऋणी बने रहते हैं। हां एक सूरत उनके लिये ऐसी है कि वह सन्तानोत्पत्ति के बिना भी पितृ ऋण से मुक्त हो सकते हैं और वह सूरत यह है कि मनुष्य अपने धन, अपनी शक्ति और अपनी विद्या को ईश्वर की राह अर्थात् दूसरों की भलाई में खर्च कर दे। इस कुरबानी का फल यह होता है कि अन्य सहस्रों बच्चों के पालन पोषण तथा शिक्षादि में सहायता देने के लिये उनकी यह शक्तियां उपयुक्त होती हैं। उनका धन अनेक अनाथों को शारीरिक मृत्यु से बचा सकता है और उनकी विद्या अनेकों को आत्मिक मृत्यु से बचाती है। कुरआन, सू० रहमान, आ० ४६–७७, प्र० ३२ में पहिले तो पुनः पुनः यही कहा है कि तुम अपने रब्ब की किस किस निआमत से इन्कार करोगे अर्थात इन नियामतों के लिये परमात्मा के कृतज्ञ बने रहो। फिर आयत ४६ में कहा है कि जो लोग ईश्वर के बल प्राक्रमादि से डरते हैं उनके लिये दो स्वर्ग हैं:—एक तो घर में बीबी, बच्चों, माता, पिता आदि के साथ सुख एवं शांति पूर्वक रहना और दूसरा सांसारिक धन आदि से अन्य मनुष्यों की सहायता करना। ईश्वर का भय मन में रखने से मनुष्य पाप नहीं कर सकता। शास्त्रोक्त रीति से सन्तानोत्पन्न करके अपने कुल रूपी उद्यान को खिला हुआ और हरा भरा रखता है और अपने धनादि से भी इस जगत् रूपी बाग़ को सींचता रहता है। सार यह कि ब्राह्मण

विद्या के धन से दूसरों का उपकार करके, क्षत्रिय शारीरिक बल से दूसरों को बचाकर और वैश्य अपने धन से विद्या तथा धर्म सम्बन्धी कार्य्यों में आर्थिक सहायता देकर अपना कर्तव्य पूरा करता है तो यह इन सब के लिये अपने २ प्रकार का स्वर्ग है। यह सब कर्म देवयान को साफ़ करके स्वर्ग में पहुँचाने का हेतु है।

४४—दो चशमे

बभ्रेदध्वर्यो मुखमेतद् विमृड्ढ्याज्याय लोकम् कृणुहि प्रविद्वान। घृतेन गात्रान सर्वा विमृढ्य कृण्वे पन्थां पितृप यः स्वर्गः॥ अथर्व० ११, १, ३,

हे अध्वर्यो! प्रजा की रक्षा करने वाले राजा को शुद्ध कर और तू बड़ा भारी विद्वान होकर आज्य अर्थात इस क्षात्र बल के भोग के लिये इस लोक को करदे और सारे अङ्गों को विशेष रूप से तेज युक्त करदे। मैं इस स्वर्ग के मार्ग को साफ़ करूं जो वृद्धों की अनुग्रह से मिलता है।

दूसरा प्रमाणः—वृषभोऽसि स्वर्ग ऋषि नार्षेयान गच्छ। सुकृता लोके सीद तत्र नो संस्कृतं॥ अथर्व० १, १, ३५।

तीसरा प्रमाणः—यं वां पिता पचति यंच माता रिप्रान्निर्मुक्त्यै शमलाश्च वाचः। स ओदनः शतधारः स्वर्ग उभे व्यापनमसि महित्वा॥ अथर्व० १२, ३, ५॥

हे स्वर्ग तू सुख की वर्षा करने वाला है। तू ऋषियों तथा ऋषि सन्तान को प्राप्त कर। तू शुभकर्मी लोगों के स्थानों में विराजमान हो। वहां ही हमको शुद्धावस्था में रख। (प्र० २)

हे पुरुषो और स्त्रियो! जिस वीर्य्य तथा ब्रह्मचर्य बल को

तुम्हारे माता पिता पितृऋण चुकाने तथा वाणी के पाप से बचा रहने के लिये बहुत पक्का करते हैं वही सौ वर्ष की आयु देने वाला तथा सैंकड़ों धारों वा नियामतों की नदियों वाला स्वर्ग है वही दोनों लोकों तथा वर्तमान और भावी सन्तानों को अपने महत्व से प्रभावित करता है। इन मन्त्रों में विशेष प्रकार के दो चशमों का वर्णन है और सू० रहमान आ० ५० में भी लिखा है कि उपरोक्त दोनों जन्नतों में दो चशमे हैं। यह दोनों मानों दो बाग़ों कों सैराब करते हैं एक तो है ब्रह्मचर्य से रक्षा की गई वीर्य रूप शक्ति का चश्मा जिससे सर्व प्रकार का बल स्थिर रहता और सन्तान उत्पन्न होने से गृहस्थ रूपी उद्यान सर सब्ज़ रहता है। और दूसरा चश्मा है ज्ञान का। इससे मनुष्य समाज में वह पारस्परिक सम्बन्ध क़ायम रहता है जो शान्ति तथा सुख का हेतु होता है। पहिले प्रमाण में प्रजा की रक्षा करने वाला राजा या सारे अङ्गों को तेज से भरने वाला क्षात्र बल उसी वीर्य्य वाले पहिले चश्मे का वर्णन करता है और स्वर्ग के लिये जो दूसरी शर्त बड़ा भारी ज्ञानी होने की है वह दूसरे प्रमाण में ऋषियों और सदाचारी लोगों के बयान में है। तीसरे प्रमाण में दोनों चश्मों का बयान एक ही जगह मौजूद है। प्रथम वीर्य या ब्रह्मचर्य का बल जिससे सन्तानोत्पन्न करके मनुष्य पितृऋण से मुक्त होता है और दूसरा वाणी के पाप से बचानेवाला ज्ञान का सरोवर।

४५—दो और जन्नत

सू० रहमान की आ० ६२ में कहा है कि आ० ४६ में वर्णित

दों जन्नतों के अलावा दो और जन्नत हैं। सो यह लोक और परलोक के दो बाग़ हैं। आ० ४६ वाले बाग़ तो वैयक्तिक सम्बन्ध रखते थे अर्थात् प्रत्येक गृहस्थी का सन्तानोत्पन्न करना तथा अपने धन को धर्म कार्य्य में लगाना। पर यह दो बाग़ बड़ा विस्तृत सम्बन्ध रखते हैं। वैशेषिक दर्शन का पहला ही सूत्र है।

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस्सिद्धि स धर्मः।

जिससे सांसारिक सुख और मोक्ष या लोक और परलोक दोनों की सिद्धि हो वह धर्म है। सो दो प्रकार के यही दो बाग़ हैं। धारा ४४ प्रमाण ३ में सौ वर्षकी आयु देने और सैंकड़ों धारों वा नियामतों की नदियों वाला स्वर्ग दोनों लोकों की अपने महत्त्व से प्रभावित करता है। यह एक स्वर्ग है इसमें सांसारिक सुख भी हैं और इन सुखों के द्वारा शान्तावस्थामें मनुष्य परलोक के लिये जो ज्ञान प्राप्ति की तय्यारी करता है उसको दूसरे लोक के लिये लाभ कारी होता है। वह दूसरा लोक अथर्व १२-३-२८ में वर्णित है:—

उपांस्तरीर करो लोक मेत गुरुः प्रथताम् समः स्वर्गः।

तस्मिंच्छ्रयाते महिषः सुपर्णो देवा एवं देवताभ्यः प्रयच्छान्॥

तू स्वयं इस लोक को बनाता और फैलाता है यह अद्वितीय स्वर्ग और फैले इसमें ज्ञानादि गुण सम्पन्न सर्व शक्तिमान परमेश्वर मौजूद है। उसे वह प्रकाश स्वरूप स्वयं देवताओं को सौंपता है।

सार यह है कि मनुष्य आप अपने ज्ञान और शुभ कर्मों का विस्तार करके मोक्ष का अधिकारी बनता है और ऐसे देव-

ताओं या ज्ञानियों को परमात्मा वह स्वर्ग लोक या आत्मिक आनन्द की अवस्था प्रदान करता है॥

४६— मुक्ति की अनित्यता

धारा सं० ६ में हम कह आए हैं कि मुक्ति की नित्यता का अर्थ यह नहीं हो सकता, कि जीवात्मा भी परमात्मा की तरह नित्य मुक्त हो जावेगा, इसलिये कि अल्पता वाला उसका स्वाभाविक गुण उसकी मुक्ति की नित्यता का विरोधी है। परन्तु बयानुल कुरआन पृष्ठ २ पर इसके विरुद्ध लिखता है:-

"सिफ़ते रहीमियित का मतलब यह है कि इन्सान के आमाल पर जो उसके फ़राइज़ की फ़रमांबरदारी में हों, अल्लातआला बड़े २ अजर देता है, इस से ऐसे अक़ायद की तरदीद होती है जो इन्सान के आमाल पर उनके महदूद होने की वजह से उनके अजर को भी महदूद क़रार देते हैं और इस से नजात को भी आरिज़ी ठहराते हैं।"

यदि यह बयान सचमुच कुरआन के आशय के अनुकूल हो तो वैदिक स्वर्ग और इसलामी बहिश्त की एकता वाली हमारी प्रतिज्ञा सिद्ध नहीं हो सकती। परन्तु निश्चय यह शब्द कुरआन की शिक्षा के विरुद्ध और साम्प्रदायिक वातावरण के आधीन ही लिखे गए हैं। कुरआन कहीं सान्त कर्मों का अनन्त फल नहीं मानता। बहिश्त के सुखदायक सारे पदार्थ सीमित या सान्त हैं। जैसे शहद दूधादि। कुरआन जो बड़े २ अजर मिलना मानता है वह अनन्त मुक्ति का अर्थ नहीं रखता। वैदिक धर्म में भी यही माना जाता है कि मुक्त जीव को बड़े से बड़ा फल मिलता है कि

छत्तीस सहस्र वार जगत की उत्पत्ती व प्रलय के काल के बराबर मुक्ति में आनन्द भोगेगा। यह इतना बड़ा फल है कि मनुष्य के दिमाग व ख़याल में भी इसका आना कठिन है। इसमें अन्याय आदि का दख़ल नहीं किन्तु ज्ञान के सर्वोच्च गुण का फल इतने लम्बे अरसे का सुख ही होना चाहिये। डाक्टर ≈) का एक डोज़ (dose) देकर मरते हुये आदमी को बचादे और वह पुरुष ५० वर्ष जीवित रह कर १० लाख रुपया कमावे तो यह ≈) के व्यय का फल नहीं डाक्टर की आयुर्वेद सम्बंधी योग्यता का फल है। विद्या के कारण साधारण सा शरीर रखने वाला उच्चाधिकारी हज़ारों रु० मासिक कमाता है पर बड़े डील डौल वाले शरीर के होते हुये अपढ़ मज़दूर केवल ।) प्रति दिन पाता है तो यह योग्यता सम्बंधी अन्तर का परिणाम है अन्याय नहीं। पर स्मरण रहे कि फल जीव को चाहे कितना बड़ा मिले होगा सान्त ही, कुरआन फ़रमाता है (प्र० ४१) कि

यसऽलूनका अनिरु हु मिन अमरे रब्बी व मा ऊती तुम मिलन इल्मे इल्ला क़लीलन।' अर्थात जीवात्मा को अल्प ही ज्ञान मिलता है अतः जब कारण ज्ञान सान्त है तो आनन्द अनन्त कैसे ? सू० बक़र आ० २८६ में कहा है :—

ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति पर उसकी योग्यता के अनुसार ही उत्तर दायित्व डालता है। जिसने अच्छे काम किये अपने लिये किये और जिसने बुरे काम किये उस पर ही उनका भार है (४२) इसी आयत में यह पुनः कहा है :—हे हमारे प्रभु ! यदि हमसे भूल चूक हो तो क्षमा कर। हमसे पूर्वकाल के मनुष्यों पर

जो आपत्तियां आईं हमें उनसे बचा। हमसे वह भार न उठवा जिसके उठाने की हम में शक्ति नहीं४३। अतः ईश्वरीय नियम भी यही है कि योग्यतानुसार जिम्मेदारी ही और जीव की कामना वा प्रार्थना भी यही है कि बोझ शक्ति के अनुसार पड़े।

कहा जाएगा कि दुख के लिए तो यह सत्य है पर सुख पर पाबंदी लगना किसी को स्वीकार नहीं हो सकता। हमारा उत्तर यह है कि अनन्त सुख की कामना निर्बुद्धि पुरुष ही कर सकता है। खुशी के आधिक्य से मनुष्य मरते हुये भी पाए गए हैं अति मधुर रसादि युक्त भोजन, मिठाई आदि भी क्षुधा निवृत्ति होजाने पर इतने बुरे लगने लगते हैं कि अधिक ठोंसा नहीं और वमनादि हुई नहीं। इसी प्रकार मुक्तिकाल के आधिक्य का जीवात्मा के लिये दुखदाई होना अनिवार्य है।

बयानुल कुरआन के लेखक ने इस दृष्टि से रहीम शब्द की बड़ी भ्रान्ति फैलाने वाली व्याख्या की है और मुक्ति की नित्यता का यथार्थ अर्थ ही पेश नहीं किया, अपने आत्मा की साक्षी के भी विरुद्ध लिखा है। अनेक आयतों का उनका अपना किया हुआ भाष्य मुक्ति की नित्यता का खण्डन कर रहा है 'तहय्यत' शब्द का अर्थ उसने अनेक स्थानों में 'चिरकाल तक रहने वाला जीवन' माना और इमाम रागवादि की शहादत से सिद्ध किया है। धारा सं० १३, पृष्ठ ३६ में 'खालिदूना' शब्द सम्बंधी व्याख्या तथा इमाम रागबे और रूहूलमुआनी के शब्दों से भी उन्होंने हमारे पक्ष का ही समर्थन किया है। और सू० हूद आ० १०८ में कुरआन स्वयं अपने मन्तव्य का निश्चित पता देता है कि

जो नित्यता ईश्वर से ही सम्बन्ध रखती है उसको छोड़ कर

यह मुक्ति का फल निरन्तर रहने वाला है।

सार यह कि वेद और कुरआन दोनों मुक्ति के अनित्य होने में सहमत है और बयानुल कुरआनका रीमार्क सर्वथा निस्सारहै।

४७—मुक्ति की अवधि

अब प्रश्न होगा कि धारा सं० ४६ में लिखी मुक्ति की अवधि का प्रमाण क्या! इसका उत्तर यह है कि :—

(१) वेद मनुष्य की आयु १०० वर्ष की मानता है जैसाकि 'जीवे म शरदां शतं' से सिद्ध है और कुरआन स्पष्ट रूप से कहता है कि परमेश्वर को सब पदार्थों की स्थिति और नाश का ज्ञान है और वह सब ज्ञान की पुस्तक में वर्णित है। (प्र० ४४) इससे कुरआन का भी १०० वर्ष की आयु को स्वीकार करना सिद्ध है।

(२) जीवात्मा के जीवन दो प्रकार के हैं। एक मनुष्य शरीर में रहने वाला, दूसरा परमेश्वर में रहने वाला (बृद्धावस्था) दोनों जीवन १०० वर्ष के ही हो सकते हैं। इनमें भेद यह होगा कि मनुष्य शरीर की अवधि २४ घंटे वाले दिन रात से बने हुये १०० वर्ष की होगी तो मुक्ति वाले जीवन की अवधि ब्रह्मदिन से बने हुए १०० वर्ष की होगी, ब्रह्मदिन क्या है इसका उत्तर अथर्ववेद देता है :—

शतं ते युत हायनान द्वे युगे त्रीणि धत्वारिकृराम: ॥

अर्थात जगत की स्थिति या ब्रह्मदिन का समय दस हजार सैकड़ा पर २-३-४ के अङ्क लगाने से जाना जाता है अर्थात चार अरब बत्तीस करोड़ साल। इतनी ही अवधि ब्रह्मरात्री की

होगी और ८ अरब ६४ करोड़ वर्ष का एक ब्रह्मदिन रात होगा। इसको ३६० से गुणा करने पर एक वर्ष और फिर १०० से गुणा करने पर मुक्तिकी पूरी अवधि ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष बनती है।

४८—कुरआन से इस अवधि का प्रमाण

ब्रह्मदिन के चार अरब बत्तीस करोड़ साल की गिन्ती के लिए ऋषियों ने उसे एक हजार भागों में विभक्त किया। जिस से प्रत्येक भाग ४३ लाख २० हजार वर्ष का हुआ। फिर इसके ४ भाग इस प्रकार किये गये कि एकसे दूसरा द्विगुना, तीसरा तिगुणा और चौथा चौगुणा है और इन चारों भागों को सत्युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग नाम देकर इन को समूह रूप से एक चतयुर्गी कहा। अस्तु ईश्वर ने ब्रह्म दिन की अवधि का ज्ञान दिया और ऋषियों ने चतुर्युगी की गणना करके १००० चतुर्युगियों का ब्रह्म दिन को माना और हर्ष का विषय है कि कुरआन अन्य सिद्धान्तों के सदृश इस अवधि को भी स्पष्ट रूप में स्वीकार करता है।

सू० हज आ० ४७ में स्पष्ट लिखा है कि निश्चय तेरे रब वाला दिन उस हजार जमानों का है जो तुमने गिनती कर रखे हैं। (४५) मनुष्यों ने जैसा कि हमने ऊपर कहा चतुर्युगी तक के काल की गिनती की है इसलिये इस आयत का आशय वेद के ही ब्रह्म दिन के काल का वर्णन करना है और ब्रह्मरात्रि की अवधि भी हजार चतुर्युगी का है सो कुरआन उसका भी सू० सिजदा आ० ५ में समर्थन करता है कि वह द्यौलोक से

पृथिवी लोक तक को अपने नियन्त्रण में चलाता है फिर उस काल में जो तुम्हारे गिने गये हज़ार ज़मानों के बराबर है यह सब कुछ उसी के हज़ार में छिपा रहेगा ४६ मू० क़द्र में भी कहा है कि ब्रह्म राजी (लैलतुलक़द्र) में सब पदार्थ कारणावस्था में चले जाते और जीवों सहित ब्रह्म में सलामत रहते हैं यहां तक कि पुनः सृष्टि की रचना का प्रारम्भ होता है। अधिक क्या ब्रह्म दिन और ब्रह्म रात्री का काल २ हज़ार चतुर्युगी या ८ अरब ६४ करोड़ वर्ष है। ऐसे ३६० दिन रात का एक साल और ऐसे सौ सालों का मुक्ति वाला महाकल्प है। दिनका हिसाब ज्ञात होने से १०० वर्ष का लेखा प्रत्येक विचार शील पुरुष कर सकता है।

४९—पुस्तक स्मापति तथा प्रार्थना

स्वर्ग सम्बन्धी सारे विषयों पर संक्षिप्त रूप से अनेकों संकेत देकर हम अन्त में यही कहना पर्याप्त समझते हैं कि दीन इसलाम सर्वांश में वैदिक धर्म का ही स्मर्थक तथा उसका दूसरा नाम है। यदि उस पर आक्षेप होते रहे हैं तो केवल कुरआन के अनुवाद तथा भाष्यादि के आधार पर होते रहे हैं या उन रिवाजों के आधार पर, जो दुर्भाग्यवश वैदिक धर्मियों में वेद का अप्रचार होने के कारण चले और इतरदेशबासियों ने उनका अनुकरण किया। गोमेध का अर्थ यहां गोवध हुआ तो दूसरे देशों में भी गौ की क़ुरबानी होने लगी। दूसरे पशुओं की बलि देने में भी भारतवर्ष का ही अनुकरण हुआ। इसी प्रकार वेद के अयोग्य पुरुषों द्वारा भाष्य होने पर जब स्वर्ग में बहुत स्त्रियों का मिलना यहां वर्णित हुआ तो कुरआन के भाष्यकारों ने भी

कुरआन के शब्दों के वैसे ही अर्थ लगा दिये। तथापि कुछ ही क्यों न हो यथार्थ स्थिति के दृष्टिकोण में आर्यों और मुसलमानों में कोई, झगड़ा या विवाद नहीं हो सकता। इसलिये हम आर्य्य और मुसलिम दोनों पक्ष के भाइयों से निवेदन करते हैं कि वह अपनी कपोल कल्पित तथा निराधार भेद भाव को छोड़ कर उस एकता तथा समानता का अनुभव करें जो वेद और कुरआन सर्वतन्त्र सत्य सिद्धान्तों की दृष्टि से प्रति पादित कर रहें और परमेश्वर से कुरआन के इन शब्दों में प्रार्थना करें।

'रब्बना इन्नका जाभिउन्नासे फ़ी यौमे लारैबा फ़ी हे (आल इमरान' ८) अर्थात हे हमारे परमेश्वर! निश्चय तू ही वह समय ला सकता है कि हम सब मत भेद से ऊपर उठ कर एकही सत्य धर्म में मिल जावें। सो प्रभो! ऐसी कृपा करो कि वह समय शीघ्राति शीघ्र आवे। ओ३म् शम्।

قرآن شریف کا ویدک بھاشیہ

یہ بھاشیہ (تفسیر) کیا ہے اہل بھارت کی ہی نہیں انسانی جماعت کی مشکلات کا کامل حل ہے۔ باہم لڑنے اور نفرت کرنے والے ہندو مسلمان اکثر یہ مسلّم مناظرین سخت غلط فہمی کا شکار ہو رہے ہیں۔ فی الحقیقت دین اسلام قدیم ویدک دھرم کا ہی نام ہے قرآن مجید قدیم دھرم کا ویسا ہی محافظ ہے جیسا کہ ستیارتھ پرکاش اور حضرت محمد صاحب اور جبرئیل صاحب نے قریباً چودہ صدی پہلے عرب میں ہی کام کیا تھا جو اس زمانہ میں مہرشی دیانند اور ڈنڈی سوامی ورجانند نے بھارت ورش میں کیا ہے۔

راقم ڈنکے کی چوٹ اعلان کرتا ہے کہ محض تراجم و تفاسیر کے نقصوں اور جہالت پر مبنی تعصبات نے اندھیر مچا رکھا ہے۔ ورنہ ویدک دھرم اور دین اسلام (جیسا کہ قرآن میں ہے) بالکل یکجان ہیں۔ نیز یہ کہ قرآن شریف کا یہ ویدک بھاشیہ ہی جو راقم کی زندگی بھر کی تحقیقات کا نچوڑ ہے۔

حضرت محمد صاحب کے اصل مدعا کی صحیح ترجمانی کرتا ہے۔

یہ دعویٰ چونکانے والا ہے لیکن جو سوسائٹی چاہے بیباک طور پر اسکا اطمینان کر سکتی ہے۔ یقیناً ان علماء سے قرآن شریف کی صحیح تفسیر کا ہونا ناممکن ہے جو نہ ویدک تعلیمات کو جانتے اور سمجھتے ہیں

یہ تفسیر ۲۰×۳۰/۸ کے چار ہزار صفحوں پر اردو ہندی میں شائع ہوگی۔ قیمت بارہ روپیے۔

حالات کی نزاکت تمام اہل ملک پر واضح ہے حتیٰ کہ باوجود انتہائی اپیل و کوششوں کے نہ کانگریس اور مہاتما گاندھی ابتک اتحاد کرا سکے ہیں اور نہ سرکاری قانون۔ مقدمات وغیرہ باہمی منافرت کو دور کرا سکے ہیں۔ راقم کو یقین ہے کہ جبتک کہ وید و قرآن کی اصل تعلیمات کے متعلق جہالت اور اس پر مبنی عمل موجود ہیں قدرت اسی طرح فریقین کو ایک دوسرے کے ذریعہ سزا اور دکھ دیتی رہیگی اور کانگریس یا سرکار تو کیا کل دنیا کی متفقہ طاقت کی بھی پیش نہ جا سکیگی برخلاف اس کے

یہ تفسیر تمام اختلافات کو مٹا کر دلوں کو مضبوطی سے متحد و یک جا کر دے گی۔

امید ہے تمام حق پسند، علم دوست اور ملک کے بہی خواہ لوگ اس اہم اور مفید ترین کام میں عملی تعاون فرماوینگے

لکھشمن آریوپدیشک آریہ سماج - برلا لائنس دہلی

فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ۝
خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۝ وَمِزَاجُهُ
مِن تَسْنِيمٍ ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝

(۳۹) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ

(۴۰) إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا
فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ
يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا
الْفَاسِقِينَ ۝

(۴۱) وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا
أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝

(۴۲) لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ ۗ

(۴۳) رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ
عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا
طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۚ

(۴۴) وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

(۴۵) وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۔

(۴۶) يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي
يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۚ مُدْهَآمَّتٰنِ ۚ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ
ۚ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۚ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ۚ
حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ۚ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۚ
مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۚ

(٣٥) سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ
السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ ذٰلِكَ فَضْلُ
اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

(٣٦) اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۚ عَيْنًا
يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۚ

(٣٧) وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۚ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا
عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۚ وَدَانِيَةً
عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۚ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ
بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ۚ قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ
قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۚ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا
ۚ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۚ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۚ وَاِذَا رَاَيْتَ
ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ۚ عَلَيْهِمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ
وَّاِسْتَبْرَقٌ ۚ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا
طَهُوْرًا ۚ

(٣٩) اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۙ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۙ تَعْرِفُ

(٢٨) وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ
يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
(٢٩) لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى وَوَقٰهُمْ عَذَابَ
الْجَحِيْمِ ۝
(٣٠) مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ
غَيْرِ اٰسِنٍ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ
لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً
حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ۝
(٣١) اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ
(٣٢) وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ٢٢- يَتَنَا
زَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ٢٣- وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ
غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ٢٤- وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
يَّتَسَآءَلُوْنَ ٢٥
(٣٣) اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ
مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۔
(٣٤) وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ٤٦ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ۝٤٨
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ۝٥٠ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۝٥٢ مُتَّكِـِٕيْنَ
عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝٥٤ -
فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝٥٦
كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۝٥٨ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ أَئِنَّكَ لَمِنَ
الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَئِنَّا لَمَدِينُونَ ۝
قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ۝ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝
قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ
مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ فَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِمِثْلِ
هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ۝ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ۝

(٢٤) جَنَّاتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ مُتَّكِئِينَ فِيهَا
بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝ وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ
هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن
نَّفَادٍ ۝

(٢٥) لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّن فَوْقِهَا غُرَفٌ
مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۝ وَعْدَ اللَّهِ لَا يُخْلِفُ
اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝

(٢٦) وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ
السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

(٢٧) وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا
جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ فِيهَا ۝ وَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي
صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ
فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝

رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا
مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝
(١٦) أُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا
تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝
(١٧) فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ
يُّحْبَرُوْنَ ۔
(١٨) فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۔
(١٩) تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيْمًا ۝
(٢٠) مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ
بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ۔
(٢١) وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ إِنَّ رَبَّنَا
لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۝ نِ الَّذِيْٓ أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ۝
(٢٢) إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝ هُمْ وَ
أَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ
وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ ۣ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝
(٢٣) إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ۝
فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝ لَا فِيْهَا
غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ۝
كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۝

الَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ
وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝
(١٠) جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَ
أَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ
بَابٍ ۝ سَلَامٌ عَلَيْكُم بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝
(١١) مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ط تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ط أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا ط تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوا ق
وَّعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝
(١٢) إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ
آمِنِينَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ
مُّتَقَابِلِينَ ۝ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۝

(١٣) يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا
خُضْرًا مِّن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ط
نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝
(١٤) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝
(١٥) جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ
وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۝ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ

اصل آیات مطابق نمبر حوالہ جات مندرجہ خط حدانی

(۱) اَلَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ وَیَقْطَعُوْنَ
مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ یُّوْصَلَ وَیُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ط
(۲) اَلَمْ یُؤْخَذْ عَلَیْهِمْ مِّیْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا یَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ
اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِیْهِ ط
(۳) یُرِیْدُ اللّٰهُ اَنْ یُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَیَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِیْنَ
لِیُحِقَّ الْحَقَّ وَیُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۰
(۴) وَبَشِّرِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ط كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۵
قَالُوْا هٰذَا الَّذِیْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ط
(۵) اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَیْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۵
(۶) یُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ
فِیْهَا نَعِیْمٌ مُّقِیْمٌ ۵ خٰلِدِیْنَ فِیْهَآ اَبَدًا ط اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۵
(۷) دَعْوٰىهُمْ فِیْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا سَلٰمٌ ۵
وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۵
(۸) وَاَمَّا الَّذِیْنَ سُعِدُوْا فَفِی الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا دَامَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ عَطَآءً غَیْرَ مَجْذُوْذٍ ۵
(۹) اَلَّذِیْنَ یُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا یَنْقُضُوْنَ الْمِیْثَاقَ ۵ وَ

ओ३म्

हिन्दू-मुसलिम युद्ध की इति श्री

तथा

स्थाई इत्तहाद का प्रारम्भ

कुरआन शरीफ़ का वैदिक भाष्य

यह भाष्य क्या है भारत निवासियों की ही नहीं सारी मानव जाति की कठिन समस्याओं का पूरा हल है। परस्पर में लड़ने और द्वेष करने वाले हिन्दू मुसलमान तथा आर्य और मुसलिम मुनाज़िर भारी ग़लत फ़हमी का शिकार हो रहे हैं वास्तव में इसलाम सनातन वैदिक धर्म का ही नाम है। कुरआन मजीद सत्य सनातन वैदिक धर्म का वैसा ही प्रतिपादक है जैसा कि सत्यार्थप्रकाश। हज़रत मुहम्मद और जबरईल साहब ने आज से १४ शताब्दी पूर्व अरब देश में वही काम किया था जो महर्षि दयानन्द और डण्डी स्वामी वृजानन्द ने इस समय में भारतवर्ष में किया है। लेखक डङ्के की चोट ऐलान करता है कि केवल टीका भाष्यादि के दोषों तथा अविद्या जन्य पक्षपात ने अन्धेर मचा रक्खा है। अन्यथा वैदिक धर्म व इसलाम (जैसा कि कुरान में है) सर्वथा एक हैं तथा कुरान शरीफ़ का यह वैदिक भाष्य ही जो लेखक के आयु भर के धार्मिक अनुसन्धान का निचोड़ है।

हज़रत मुहम्मद साहब के असली आशय का द्योतक है

निश्चय उन उलमा से कुरआन शरीफ़ का यथार्थ भाष्य होना सर्वथा असम्भव है जो वैदिक सत्य सिद्धान्तों को न जानते और न समझते हैं। यह शब्द चौंकाने वाले हैं पर जो सोसायटी चाहे पब्लिक तौर पर इसका निर्णय कर सकती है। यह भाष्य २०×३० के ८ वें के चार हज़ार बड़े पृष्ठों पर उर्दू व हिन्दी में

छपेगा। इसके आधे से भी कम पृष्ठों के भाष्य २५-३० रु० में बिक रहे हैं परन्तु मैंने केवल १२) रु० मूल्य रक्खा है। इस पर भी सर्वसाधारण १) रु० पेशगी आर्डर के साथ भेज कर ६) रु० में और लाइब्रेरियां तथा उपदेशक व मुबल्लिग़ ७) रु० पेशगी जमा कराकर पूरा भाष्य ले सकेंगे।

वर्तमान स्थिति इतनी शोचनीय है कि न कांग्रेस और म० गांधी निरन्तर परिश्रम करने पर भी मेल करा सके हैं न सरकारी क़ानून और मुकद्दमे परस्पर के वैमनस्य को हटा सके हैं, और लेखक को पूर्ण विश्वास है कि जब तक वेद और कुरआन की यथार्थ शिक्षा सम्बन्धी अज्ञान तथा उसके परिणाम रूप में द्वेष और पक्षपात पूर्ण व्यवहार मौजूद रहेंगे, ईश्वर के अटल नियमके अनुसार दोनों पक्ष एक दूसरे के द्वारा दुख और दण्ड ही पाते रहेंगे, और कांग्रेस या सरकार तो क्या सारी मानव जाति की संगठित शक्ति की भी कुछ पेश न जा सकेगी। पर

यह भाष्य निश्चय मत भेद को मिटाकर
दिलों को मिला देगा

आशा है समस्त सत्य प्रिये, विद्या प्रेमी तथा मनुष्य समाज के शुभचिन्तक सज्जन इस सर्वोत्तम, परमावश्यक तथा सर्व हितकारी कार्य में हार्दिक सहयोग देंगे और पेशगी आर्डर तो अति शीघ्र देंगे।

निवेदक:—

लक्ष्मण आर्योपदेशक आर्यसमाज बिरला लाइन्स देहली

मुद्रक—
लाला सेवाराम चावला, चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, नया बाज़ार, देहली।